Bete Ko Nasihat (Hindi)

इस्लाहे नफ़्स और फ़िक्रे आख़िरत का जज़्बा बढ़ाने वाली जामेअ़ तह़रीर

اَیُّھَا الْوَلَد

तरजमा बनाम

बेटे को नसीह़त

मुसन्निफ़ : हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى

(अल मुतवफ़्फ़ा 505 हि.)

जाली मुबारक मज़ारे पाक इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अ़र्ज़ **:** शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है **:**

اَللّٰھُمَّ افۡتَحۡ عَلَیۡنَا حِکۡمَتَکَ وَانۡشُرۡ
عَلَیۡنَا رَحۡمَتَکَ یَا ذَاالۡجَلَالِ وَالۡاِکۡرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(المُستطرَف ج١ ص٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "اَیُّھَا الۡوَلَد"

हुज्जतुल इस्लाम इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡوَالِی ने अ़रबी ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है। मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने इस का **उर्दू** तरजमा और तख़्रीज कर के **"बेटे को नसीह़त"** के नाम से पेश किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद
के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

नफ़्स की इस्लाह़ और फ़िक्रे आख़िरत का जज़्बा बढ़ाने वाली

जामेअ़ तह़रीर

اَيُّهَا الْوَلَد

तरजमा बनाम

बेटे को नसीह़त

मुअल्लिफ़ :

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन

मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى

मुतर्जिमीन : मदनी उ़लमा (शो'बए तराजिमे कुतुब)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

नाशिर

मक्तबतुल मदीना

नाम किताब : اَيُّهَا الْوَلَد

तरजमा बनाम : **बेटे को नसीह़त**

मुअल्लिफ़ : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى

मुतर्जिमीन : **मदनी उ़लमा (शो'बए तराजिमे कुतुब)**

इशाअ़त : अगस्त 2023

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 14 शव्वालुल मुकर्रम 1425 हि. ह़वाला नम्बर : 163

الحمد للّٰہ رب العٰلمین والصلوٰۃ والسلام علٰی سید المرسلین وعلٰی الہ واصحا بہ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि किताब "اَيُّهَا الْوَلَد" के तरजमा

"बेटे को नसीह़त"

(मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है । मजलिस ने इसे मत़ालिब व मफ़ाहीम के ए'तिबार से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं ।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल (दा'वते इस्लामी)

23-09-2010

फ़ेहरिस्त

मज़्मून	सफ़ह़ा	मज़्मून	सफ़ह़ा
इस किताब को पढ़ने की निय्यतें	5	फ़िरिश्ते की निदा	26
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या	6	इत़ाअ़त व इ़बादत की ह़क़ीक़त	27
पहले इसे पढ़ लीजिये !	8	बा'ज़ बातें ज़बान से बयान नहीं हो सकतीं	30
ऐ मह़ब्बत करने वाले		सालिक के लिये ज़रूरी बातें	31
बहुत ही प्यारे बेटे !	11	चार हज़ार अह़ादीस में से सिर्फ़ एक	31
महक्ता महकाता मदनी फूल	11	30 सालह दौरे त़ालिबे इ़ल्मी का ख़ुलासा	32
नसीह़त किस पर असर नहीं करती ?	12	﴾1﴿...... पहला फ़ाएदा	32
इ़ल्म पर अ़मल न करने की मिसाल	13	﴾2﴿...... दूसरा फ़ाएदा	33
सिर्फ़ किताबें जम्अ़ करना फ़ाएदा मन्द नहीं	14	﴾3﴿...... तीसरा फ़ाएदा	33
अ़मल के मुतअ़ल्लिक़		﴾4﴿...... चौथा फ़ाएदा	34
5 फ़रामीने बारी तआ़ला	14	﴾5﴿...... पांचवां फ़ाएदा	34
इस्लाम की बुन्याद	15	﴾6﴿...... छटा फ़ाएदा	35
ईमान किसे कहते हैं	15	﴾7﴿...... सातवां फ़ाएदा	35
अल्लाह तआ़ला की रह़मत से		﴾8﴿...... आठवां फ़ाएदा	36
क़रीब कौन ?	16	मुर्शिद की अहम्मिय्यत व ज़रूरत	37
रह़मते ख़ुदावन्दी	17	पीरे कामिल का आ़लिम होना ज़रूरी है	38
झूटी उम्मीद व आस	18	पीरे कामिल के 26 औसाफ़	39
अ़क़्ल मन्द और अह़मक़	19	पीरो मुर्शिद का ज़ाहिरी एह़तिराम	40
ह़ुसूले इ़ल्म व मुत़ालए़ का मक़्सद	19	पीरो मुर्शिद का बात़िनी एह़तिराम	41
मय्यित से 40 सुवालात	20	बद अ़क़ीदा लोगों की सोह़बत से परहेज़	41
ग़ैर मुफ़ीद और बे फ़ाएदा इ़ल्म	21	तसव्वुफ़ की ह़क़ीक़त	41
सआ़दत मन्द और बद बख़्त	22	बन्दगी की ह़क़ीक़त	42
ठन्डा पानी देख कर ग़शी	23	तवक्कुल की ह़क़ीक़त	42
सिर्फ़ ह़ुसूले इ़ल्म ही काफ़ी नहीं	24	इख़्लास की ह़क़ीक़त	43
अल्लाह तआ़ला की पसन्दीदा आवाज़ें	25	रियाकारी और इस का इ़लाज	43

इ़ल्म पर अ़मल की बरकत	43	﴾3﴿...... तीसरी नसीह़त	53
आठ अहम मदनी फूल	45	उमरा के तोह़फ़े या शैत़ान का वार ?	53
जिन 4 बातों से दूरी लाज़िम है	45	﴾4﴿...... चौथी नसीह़त	53
﴾1﴿...... पहली नसीह़त	45	जिन 4 बातों पर अ़मल करना है	55
मुनाज़रे की इजाज़त कब है ?	46	अल्लाह तआ़ला से बन्दे का मुआ़मला	55
क़ल्बी अमराज़ में मुब्तला मरीज़	46	﴾5﴿...... पांचवीं नसीह़त	55
जाहिल मरीज़ों की 4 अक़्साम	47	बन्दों से मुआ़मला	55
(1)...... पहला मरीज़ (ह़सद का शिकार)	47	﴾6﴿...... छटी नसीह़त	55
(2)...... दूसरा मरीज़ (ह़माक़त का शिकार)	48	इ़ल्मो मुत़ालए़ की नौइ़य्यत	55
(3)...... तीसरा मरीज़ (कम अ़क़्ली का शिकार)	48	﴾7﴿...... सातवीं नसीह़त	55
		नजात का मदनी नुस्ख़ा	56
(4)...... चौथा मरीज़ (नसीह़त का त़लब गार)	49	दिलों और निय्यतों पर नज़र	56
		कितना इ़ल्म फ़र्ज़ है	57
वा'ज़ो बयान की ह़क़ीक़त	49	ह़िर्स व त़मअ़ से दूरी	58
﴾2﴿ दूसरी नसीह़त	49	﴾8﴿...... आठवीं नसीह़त	58
वा'ज़ो नसीह़त में दो बातों से परहेज़	50	दुआ़ए ख़ास	58
उमरा से मेलजोल का नुक़्सान	53	मआख़िज़ो मराजेअ़	61

ता'रीफ़ और सआ़दत

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर बैज़ावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 685 हि.) इर्शाद फ़रमाते हैं कि ''जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी करता है दुन्या में उस की ता'रीफ़ें होती हैं और आख़िरत में सआ़दत मन्दी से सरफ़राज़ होगा।''

(تفسیر البیضاوی، پ ۲۲، الاحزاب، تحت الآیۃ: ۷۱، ج ٤، ص ۳۸۸)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"नसीह़त क़बूल करो" के 12 ह़ुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की 12 निय्यतें

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''نِیَّةُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ'' या'नी मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।''

(المعجم الکبیر للطبرانی، الحدیث: ۵۹۴۲، ج۶، ص۱۸۵)

दो मदनी फूल :

﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा)। ﴾5﴿ रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾6﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾7﴿ जहां जहां **''अल्लाह''** का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾8﴿ जहां जहां ''सरकार'' का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। ﴾9﴿ दूसरों को **येह किताब** पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। ﴾10﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात अन्डर लाइन करूंगा। ﴾11﴿ इस ह़दीसे पाक **''تَهَادَوْا تَحَابُّوْا''** एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी।'' (مؤطاامام مالک،ج۲، ص۴۰۷،الحدیث:۱۷۳۱) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़्फ़तन दूंगा। ﴾12﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा। (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ि़याई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की गै़र सियासी तह़रीक ''**दा'वते इस्लामी**'' नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस ''**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**'' भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है । इस के मुन्दरजए ज़ैल छ6 शो'बे हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه (2) शो'बए तराजिमे कुतुब

(3) शो'बए दर्सी कुतुब (4) शो'बए इस्लाह़ी कुतुब

(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब (6) शो'बए तख़्रीज

''**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**'' की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये

बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती मदनी काम में हर मुम्किन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.

पहले इसे पढ़ लीजिये !

इ़ल्मे दीन का ह़ुसूल बेशक बहुत बड़ी सआ़दत और अफ़्ज़ल इ़बादत है कुरआने मजीद फुरक़ाने ह़मीद ने अहले इ़ल्म की फ़ज़ीलत में इर्शाद फ़रमाया :

يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍؕ (پ۲۸،مجادله:۱۱)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह तुम्हारे ईमान वालों के और उन के जिन को इ़ल्म दिया गया दरजे बुलन्द फ़रमाएगा ।

ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि ''आ़लिम की फ़ज़ीलत आ़बिद पर ऐसी है जैसी मेरी फ़ज़ीलत तुम्हारे अदना पर ।''(1)

एक और मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया : ''एक फ़क़ीह (आ़लिम) हज़ार आ़बिदों से ज़ियादा शैत़ान पर भारी है ।''(2)

लेकिन इ़ल्म वोही फ़ाएदा मन्द है जिस से नफ़्अ़ उठाया जा सके इस लिये कि नबिय्ये करीम, रऊफुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बे फ़ाएदा इ़ल्म से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगी है । चुनान्चे,

प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم यूं दुआ़ मांगा करते : ''اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عِلْمٍ لَّا يَنْفَع. या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ऐसे इ़ल्म से तेरी पनाह मांगता हूं जो फ़ाएदा न दे ।''(3)

लिहाज़ा वोही इ़ल्म ह़ासिल किया जाए जो दुन्या व आख़िरत में नाफ़ेअ़ हो और जिस इ़ल्म से कोई फ़ाएदा न पहुंचे उस से कनारा कशी इख़्तियार कर ली जाए । हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद

1......سنن الترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقه، الحدیث: ۲٦٩٤، ج٤، ص٣١٤.

2......سنن الترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقه، الحدیث: ۲٦٩٠، ج٤، ص٣١٢.

3......صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب التعوذ من شر، الحدیث: ۲۷۲۲، ص ١٤٥٧.

बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی से इन के एक शागिर्द ने इस बारे में मक्तूब के ज़रीए इस्तिफ़्सार किया और साथ में कुछ नसीहतों का भी तालिब हुवा। चुनान्चे आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने जवाबन रिसाला नुमा मक्तूब तहरीर फ़रमाया जो "اَیُّہَا الْوَلَد" के नाम से मशहूर हुवा। इस मक्तूब में हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی ने एक शफ़ीक़ बाप की तरह अपने रूहानी बेटे को नसीहतें इर्शाद फ़रमाई हैं। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का येह मुख़्तसर मक्तूब गोया तसव्वुफ़ का मुख़्तसर व जामेअ़ निसाब है। कामिल तवज्जोह के साथ इस का पढ़ना बल्कि बार बार पढ़ने से اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ दिल में मदनी इन्क़िलाब बरपा होगा। हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی का लिखा हुवा एक एक जुम्ला तासीर का तीर बन कर दिल में उतरता महसूस होगा।

कामयाबी व नजात हासिल करने के लिये हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی ने तज़्कियए नफ़्स और इस्लाहे आ'माल पर काफ़ी ज़ोर दिया है और मुर्शिदे कामिल की ज़रूरत को इस के लिये लाज़िमी क़रार दिया है। जब कि सिर्फ़ हुसूले इल्म ही को सब कुछ समझ लेने वालों को सख़्त तम्बीह फ़रमाई है। मसलन इस मल्फ़ूज़ पर ग़ौर फ़रमाएं तो दिल की कैफ़िय्यात बदलती नज़र आएंगी। चुनान्चे,

इर्शाद फ़रमाया : "जो इल्म आज तुझे गुनाहों से दूर नहीं कर सका और **अल्लाह** तआ़ला की इताअ़त व इबादत का शौक़ पैदा न कर सका तो याद रख येह कल क़ियामत में तुझे जहन्नम की आग से भी न बचा सकेगा।"

लिहाज़ा हर मुसल्मान को खुसूसन तलबा को चाहिये अव्वल ता आख़िर येह रिसाला मुकम्मल पढ़ लें। मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या ने शो'बए तराजिमे कुतुब को इस के उर्दू तरजमे की ज़िम्मेदारी सोंपी। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! इस का उर्दू तरजमा बनाम "**बेटे को नसीहत**" आप के हाथों में है। इस तरजमे में जो भी ख़ूबियां हैं वोह यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के **प्यारे हबीब** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़ताओं, **औलियाए किराम** رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام की

इनायतों और शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा है और जो ख़ामियां हैं उन में हमारी कोताह फ़ह्मी का दख़्ल है।

तरजमे के लिये दारुल फ़िक्र बैरूत का नुस्ख़ा (मत़्बूआ़ 1424 हि. / 2003 ई.) इस्ति'माल किया गया है और तरजमा करते हुए इन उमूर का ख़ास ख़याल रखा गया है :

☆...... सलीस और बा मुह़ावरा तरजमा किया गया ताकि कम पढ़े लिखे इस्लामी भाई भी समझ सकें।

☆...... आयाते मुबारका का तरजमा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن के तरजमए कुरआन "**कन्ज़ुल ईमान**" से लिया गया है।

☆...... आयाते मुबारका के ह़वाले का भी एहतिमाम किया गया है और ह़त्तल मक्दूर अह़ादीसे त़य्यिबा व वाक़िआ़त की तख़्रीज भी की गई है।

☆...... बा'ज़ मक़ामात पर ह़वाशी मअ़ त़ख़्रीज का इल्तिज़ाम किया गया है।

☆...... मौक़अ़ की मुनासबत से जगह ब जगह उ़न्वानात क़ाइम किये गए हैं।

☆...... नीज़ मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी हिलालैन (......) में लिखने का एहतिमाम किया गया है।

☆...... अ़लामाते तरक़ीम (रुमूज़े औक़ाफ़) का भी ख़याल रखा गया है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ है कि हमें "**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**" करने के लिये **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या** को दिन पच्चीसवीं और रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

शो'बए तराजिमे कुतुब (मजलिसे अल मदीनलुत इल्मिय्या)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

ऐ मह़ब्बत करने वाले बहुत ही प्यारे बेटे !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें अपनी इत़ाअ़त में लम्बी उ़म्र अ़त़ा फ़रमाए और अपने प्यारों के रास्ते पर चलना नसीब फ़रमाए । येह बात ज़ेह्न नशीन कर लो !

नसीह़त के महक्ते फूल तो सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अह़ादीस व सुन्नत से ह़ासिल होते हैं । अगर तुम्हें रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह से फ़ैज़ाने नसीह़त ह़ासिल हो चुका है तो फिर मेरी किसी नसीह़त की ज़रूरत नहीं और अगर बारगाहे मुस्त़फ़ा से नसीह़त नहीं पहुंची तो येह बताओ तुम ने गुज़रे अय्याम में क्या ह़ासिल किया ?

महक्ता महकाता मदनी फूल

ऐ प्यारे बेटे !

हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी उम्मत को जो नसीह़तें इर्शाद फ़रमाईं उन में से एक महक्ता मदनी फूल येह है : ''عَلَامَةُ اِعْرَاضِ اللّٰہِ تَعَالٰی عَنِ الْعَبْدِ اِشْتِغَالُہٗ بِمَالَا یَعْنِیْہِ وَاِنَّ امْرَاً ذَھَبَتْ سَاعَۃٌ مِّنْ عُمُرِہٖ فِیْ غَیْرِ مَاخُلِقَ لَہٗ لَجَدِیْرٌ اَنْ تَطُوْلَ عَلَیْہِ حَسْرَتُہٗ وَمَنْ جَاوَزَ الْاَرْبَعِیْنَ وَلَمْ یَغْلِبْ عَلَیْہِ خَیْرُہٗ شَرَّہٗ فَلْیَتَجَھَّزْ اِلَی النَّارِ'' या'नी : बन्दे का ग़ैर मुफ़ीद कामों में मश्ग़ूल होना इस बात की अ़लामत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस से अपनी नज़रे इ़नायत फेर ली है और जिस मक़्सद के लिये बन्दे को पैदा किया गया है अगर उस की ज़िन्दगी का एक लम्ह़ा भी उस के इ़लावा गुज़र गया तो वोह इस बात का ह़क़दार है कि उस की ह़सरत त़वील हो जाए और जिस की उ़म्र 40 साल से ज़ियादा हो जाए और इस के बा वुजूद उस की बुराइयों पर उस की अच्छाइयां ग़ालिब न

हों तो उसे जहन्नम की आग में जाने के लिये तय्यार रहना चाहिये।''(1)

समझदार और अ़क़्ल मन्द के लिये इतनी ही नसीह़त काफ़ी है।

नसीह़त किस पर असर नहीं करती ?

ऐ लख़्ते जिगर !

नसीह़त करना तो बहुत आसान है...... मगर उस को क़बूल करना (या'नी उस पर अ़मल करना) बहुत ही मुश्किल है...... क्यूं कि जिन लोगों के दिलों में दुन्यावी लज़्ज़ात और नफ़्सानी ख़्वाहिशात का ग़लबा हो, उन को नसीह़त व भलाई की बातें कड़वी लगती हैं...... बिल ख़ुसूस उस रस्मी त़ालिबे इ़ल्म को नसीह़त ज़ियादा कड़वी लगती है जो अपनी वाह वाह चाहने और दुन्यावी शोहरत के ह़ुसूल में मगन हो...... क्यूं कि वोह इस गुमाने फ़ासिद में मुब्तला होता है कि ''इसे काम्याबी और आख़िरत में नजात के लिये सिर्फ़ इ़ल्म ही काफ़ी है और अ़मल की कोई ज़रूरत नहीं''...... ह़ालां कि येह तो फ़ल्सफ़ियों का नज़रिय्या है...... और येह शख़्स इतना भी नहीं जानता कि इ़ल्म ह़ासिल करने के बा'द उस पर अ़मल न करना आख़िरत में शदीद पकड़ का बाइ़स होगा। जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : '' اَشَدُّ النَّاسِ عَذَاباً یَوْمَ الْقِیَامَةِ عَالِمٌ لَا یَنْفَعُهُ اللّٰهُ بِعِلْمِهٖ '' या'नी : क़ियामत के दिन सब से ज़ियादा अ़ज़ाब उस आ़लिम को होगा जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस के इ़ल्म के सबब कोई फ़ाएदा न पहुंचाया।''(2)

सय्यिदुत्ताइफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی को बा'दे विसाल किसी ने ख़्वाब में देखा तो पूछा : ''ऐ अबुल क़ासिम ! कुछ इर्शाद फ़रमाइये (बा'दे वफ़ात क्या बीती ?)।'' फ़रमाया : ''इ़ल्मी

1......تفسیر روح البیان،سورۂ بقرۃ،تحت الایۃ:۲۳۲،ج۱،ص۳۶۳.

2......شعب الایمان للبیھقی،باب فی نشر العلم،الحدیث:۱۷۷۸،ج۲،ص۲۸۵.

अब्ह़ास और इ़ल्मी निकात की बारीकियां काम न आईं मगर रात (की तन्हाई) में अदा की जाने वाली चन्द रक्अ़तों ने ख़ूब फ़ाएदा पहुंचाया।"

इ़ल्म पर अ़मल न करने की मिसाल

ऐ नूरे नज़र !

नेक आ'माल और बात़िनी कमालात से ख़ाली न रहना (बल्कि ज़ाहिरो बात़िन को अख़्लाके़ ह़सना से मुज़य्यन व आरास्ता करना)...... और यक़ीन रखो कि (अ़मल के बिग़ैर) सिर्फ़ इ़ल्म ही (बरोज़े ह़श्र) तेरे काम न आएगा...... जैसा कि एक शख़्स जंगल में हो और उस के पास दीगर हथियारों के इ़लावा 10 हिन्दी तलवारें भी हों...... और वोह उन को इस्ति'माल करने में महारत भी रखता हो...... साथ ही साथ वोह बहादुर भी हो...... ऐसे में अचानक एक मुहीब और ख़ौफ़नाक शेर उस पर ह़म्ला कर दे...... तो तुम्हारा क्या ख़याल है कि इस्ति'माल किये बिग़ैर सिर्फ़ उन हथियारों की मौजूदगी उसे इस मुसीबत से बचा सकती है ?...... यक़ीनन तुम अच्छी त़रह़ जानते हो कि उन हथियारों को इस्ति'माल में लाए बिग़ैर इस ह़म्ले से नहीं बचा जा सकता...... पस याद रखो कि अगर कोई शख़्स एक लाख इ़ल्मी मसाइल पढ़ कर उन को अच्छी त़रह़ जान ले मगर अ़मल न करे तो वोह मसाइल उसे कुछ नफ़्अ़ न देंगे...... इस बात को यूं भी समझा जा सकता है कि अगर कोई शख़्स बीमार हो...... उसे गरमी और सफ़रा (एक क़िस्म का मरज़) की शिकायत हो और उसे मा'लूम हो कि इस का इ़लाज सिकन्ज बीन (सिर्का या नीबू के अ़रक़ का पका हुवा शरबत) और कश्काब (जव का पानी) के इस्ति'माल करने में है तो इन्हें इस्ति'माल किये बिग़ैर (सिर्फ़ इन की मौजूदगी से) उस का मरज़ किस त़रह़ ख़त्म हो सकता है ?

सिर्फ़ किताबें जम्अ़ करना फ़ाएदा मन्द नहीं

प्यारे बेटे !

अगर तुम 100 साल तक हुसूले इ़ल्म में मसरूफ़ रहो और एक हज़ार किताबें जम्अ़ कर लो तब भी अ़मल के बिग़ैर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत के मुस्तह़िक़ नहीं बन सकते ।

अ़मल के मुतअ़ल्लिक़ 5 फ़रामीने बारी तआ़ला :

﴾1﴿

وَ اَنْ لَّیْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى ﴿۳۹﴾
(پ۲۷،النّجم:۳۹)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और येह कि आदमी न पाएगा मगर अपनी कोशिश ।

﴾2﴿

فَمَنْ كَانَ یَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْیَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا
(پ۱٦،الكهف:۱۱۰)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिये कि नेक काम करे ।

﴾3﴿

جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ﴿۸۲﴾
(پ۱۰،التوبه:۸۲)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बदला उस का जो कमाते थे ।

﴾4﴿

اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿۱۰۷﴾ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا لَا یَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿۱۰۸﴾
(پ۱٦،الكهف:۱۰۷،۱۰۸)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये फ़िरदौस के बाग़ उन की मेहमानी है वोह हमेशा उन में रहेंगे उन से जगह बदलना न चाहेंगे ।

﴾5﴿

اِلَّا مَنۡ تَابَ وَ اٰمَنَ وَ عَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا (پ۱۹،الفرقان:۷۰) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** मगर जो तौबा करे और ईमान लाए और अच्छा काम करे।

इस्लाम की बुन्याद

और मज़्कूरा आयाते मुबारका के इलावा इस ह़दीसे पाक के बारे में तुम क्या कहते हो ? (क्या अब भी तुझे अ़मल की तरग़ीब नहीं मिलेगी ?) بُنِيَ الۡاِسۡلَامُ عَلٰى خَمۡسٍ شَهَادَةِ اَنۡ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوۡلُ اللّٰهِ وَ اِقَامِ الصَّلٰوةِ وَ اِیۡتَاءِ الزَّكَاةِ وَصَوۡمِ رَمَضَانَ وَ حَجِّ الۡبَیۡتِ مَنِ اسۡتَطَاعَ اِلَیۡهِ سَبِیۡلًا या'नी : इस्लाम की बुन्याद 5 चीज़ों पर है। इस बात की गवाही देना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और ह़ज़रत मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के रसूल हैं। नमाज़ क़ाइम करना। ज़कात अदा करना। रमज़ान के रोज़े रखना और जिसे इस्तित़ाअ़त हो उस का बैतुल्लाह का ह़ज करना।[1]

ईमान किसे कहते हैं

اَلۡاِیۡمَانُ قَوۡلٌ بِاللِّسَانِ وَ تَصۡدِیۡقٌ بِالۡجَنَانِ وَعَمَلٌ بِالۡاَرۡكَان या'नी : ईमान ज़बान से इक़रार, दिल से तस्दीक़ और अरकाने (इस्लाम) पर अ़मल करने का नाम है।[2]

1......صحيح البخاری، كتاب الايمان ،باب دعاؤكم ايمانكم،الحديث:۸، ج۱،ص۱٤.

2...... शारेहे़ बुख़ारी फ़क़ीहे आ'ज़मे हिन्द ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى की तह़रीर का ख़ुलासा है : ईमान के सिलसिले में कसीर इख़्तिलाफ़ात हैं। आ'माल व अक़्वाल ईमान के जुज़ हैं या नहीं ? (ह़ज़रते सय्यिदुना) इमाम मालिक, इमाम शाफ़ेई, इमाम अह़मद बिन ह़म्बल और जम्हूर मुह़द्दिसीन (رَحِمَهُمُ اللهُ المُبِين) आ'माल व अक़्वाल को ईमान का जुज़ मानते हैं और (ह़ज़रते सय्यिदुना) इमामे आ'ज़म व जम्हूर मुतकल्लिमीन व मुह़क़्क़िक़ीन मुह़द्दिसीन (رَحِمَهُمُ اللهُ المُبِين) आ'माल व अक़्वाल को ईमान का जुज़ नहीं मानते। सह़ीह़ व राजेह़ येही है कि आ'माल व अक़्वाल ईमान के जुज़ नहीं। (نزهة القاری شرح صحيح البخاری، ج۱،ص۲۳٦،ملخصًا) इस के दलाइल जानने के लिये "**नुज़्हतुल क़ारी**" के इसी मक़ाम का मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये। नीज़ **मक्तबतुल मदीना** की...

अल्लाह तआ़ला की रह़मत से क़रीब कौन ?

नेक आ'माल की अहम्मिय्यत और फ़ज़ीलत के मुतअ़ल्लिक़ (क़ुरआनो ह़दीस में मौजूद) दलाइल को शुमार नहीं किया जा सकता...... अगर बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से जन्नत तक पहुंच गया तो येह उस के इत़ाअ़त व इ़बादत बजा लाने के बा'द होगा...... क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत उस के नेक बन्दों के क़रीब होती है।

और अगर येह कहा जाए कि बन्दे का साह़िबे ईमान होना ही जन्नत में दाख़िले के लिये काफ़ी है...... (और अ़मल की ज़रूरत नहीं) तो हम कहेंगे कि आप का कहना दुरुस्त है...... मगर इसे जन्नत में जाना कब नसीब होगा ?...... वहां तक पहुंचने के लिये काफ़ी दुश्वार गुज़ार घाटियों और पुरख़ार वादियों का सामना करना पड़ेगा...... सब से पहला मर्ह़ला तो ईमान की घाटी से ब ह़िफ़ाज़त गुज़रना है...... क्या ख़बर बन्दा ईमान सलामत ले जाने में काम्याब होता भी है या

... मत़्बूआ़ **612** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब**" के सफ़ह़ा **39** ता **40** पर क़िब्ला अमीरे अहले सुन्नत, शैख़े त़रीक़त, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه तह़रीर फ़रमाते हैं : ईमान लुग़त में तस्दीक़ करने (या'नी सच्चा मानने) को कहते हैं। (تفسیر قرطبی، ج۱، ص۱۴۷) ईमान का दूसरा लुग़वी मा'ना है : अम्न देना। चूंकि मोमिन अच्छे अ़क़ीदे इख़्तियार कर के अपने आप को दाइमी या'नी हमेशा वाले अ़ज़ाब से अम्न दे देता है इस लिये अच्छे अ़क़ीदों के इख़्तियार करने को ईमान कहते हैं। (तफ़्सीरे नईमी, जि. 1, स. 8) और इस्तिलाहे शर्अ़ में ईमान के मा'ना हैं : "सच्चे दिल से इन सब बातों की तस्दीक़ करे जो ज़रूरिय्याते दीन से हैं।" (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 1, स. 92) और आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हर बात में सच्चा जाने। हुज़ूर की ह़क़्क़ानिय्यत को सिद्क़ दिल से मानना ईमान है जो इस का मुक़िर (या'नी इक़्रार करने वाला) हो उसे मुसल्मान जानेंगे जब कि उस के किसी क़ौल या फ़े'ल या ह़ाल में **अल्लाह** व रसूल (عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का इन्कार या तक्ज़ीब (या'नी झुटलाना) या तौहीन न पाई जाए।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 29, स. 254, रज़ा फ़ाउन्डेशन)

नहीं ?[1]...... (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारा ईमान सलामत रखे। आमीन)...... और अगर (काम्याब हो कर) जन्नत में दाखि़ल हो भी गया तो फिर भी मुफ़्लिस जन्नती होगा...... चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन इर्शाद फ़रमाएगा : "ऐ मेरे बन्दो ! मेरी रह़मत से जन्नत में दाखि़ल हो जाओ और इसे अपने **आ'माल** के मुत़ाबिक़ तक़्सीम कर लो।"

रह़मते ख़ुदावन्दी

ऐ लख़्ते जिगर !

अ़मल करोगे तो अज्रो सवाब पाओगे...... मन्क़ूल है कि बनी इसराईल के एक आ़बिद ने 70 साल तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत की। रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ ने उस की शानो अ़ज़मत फ़िरिश्तों पर ज़ाहिर करने का इरादा फ़रमाया तो उस की त़रफ़ एक फ़िरिश्ता भेजा ताकि उसे येह बताए कि इस क़दर ज़ोहदो इ़बादत के बा वुजूद वोह जन्नत का मुस्तह़िक़ नहीं। चुनान्चे, फ़िरिश्ते ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का पैग़ाम पहुंचाया तो उस नेक शख़्स ने जवाब दिया : "हमें तो इ़बादत के लिये पैदा किया गया है इस लिये हमें इ़बादत ही करना चाहिये।" (अब येह ख़ालिक़ो मालिक عَزَّوَجَلَّ की मरज़ी है कि मह़ज़ अपने करम से दाखि़ले जन्नत फ़रमा दे या अ़द्ल करते हुए जहन्नम में झोंक दे) जब फ़िरिश्ता रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे इ़ज़्ज़त में ह़ाज़िर हुवा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पूछा : "मेरे बन्दे ने क्या जवाब

1...... ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनाने की ख़ात़िर **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **472** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बयानाते अ़त्तारिया**" में शामिल रिसाला "**बुरे ख़ातिमे के अस्बाब**" सफ़ह़ा **107** ता **146** का मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये।

दिया ?" अ़र्ज़ की : "ऐ तमाम जहानों के परवर दगार ! तू अपने बन्दों के जवाब को ख़ूब जानता है।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "जब मेरा बन्दा मेरी इ़बादत से जी नहीं चुराता तो मेरी शाने करीमी का तक़ाज़ा है कि मैं भी उस से नज़रे रह़मत न फेरूं। ऐ फ़िरिश्तो ! गवाह रहो ! मैं ने उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दी।"

हु़ज़ूरे अन्वर, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

"حَاسِبُوْا اَنْفُسَكُمْ قَبْلَ اَنْ تُحَاسَبُوْا وَ زِنُوْا اَعْمَالَكُمْ قَبْلَ اَنْ تُوْزَنُوْا" या'नी : इस से पहले कि तुम्हारा हि़साब हो अपना हि़साब ख़ुद कर लो और अपने आ'माल का वज़्न कर लो क़ब्ल इस के कि इन्हें तोला जाए।"(1)

झूटी उम्मीद व आस

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم इर्शाद फ़रमाते हैं : "जो शख़्स येह गुमान रखता है कि नेक आ'माल अपनाए बिग़ैर जन्नत में दाख़िल होगा वोह झूटी उम्मीद व आस का शिकार है और जिस ने येह ख़याल किया कि नेक आ'माल की भरपूर कोशिश से ही जन्नत में दाख़िल होगा तो गोया वोह ख़ुद को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मुस्तग़्नी व बे परवा समझ बैठा है।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : "अच्छे आ'माल के बिग़ैर जन्नत की त़लब गुनाह से कम नहीं।"(3)

1......سنن الترمذی، کتاب صفة القیامة، باب(ت ۹۰)، الحدیث:۲٤٦۷، ج٤، ص۲۰۸.

2......تفسیرروح البیان، سورۂ بقرة، تحت الایة:۲٤٦، ج۱، ص۳۸۳.

3......تفسیرروح البیان، سورۂ رعد، تحت الایة:۲٤٦، ج٤، ص۳۸۸.

और आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का ही इर्शादे गिरामी है कि "ह़क़ीक़ी बन्दगी की अ़लामत येह है कि बन्दा अ़मल न छोड़े बल्कि अ़मल को अच्छा समझना छोड़ दे।"

अ़क़्ल मन्द और अह़मक़

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

"اَلْكَيِّسُ مَنْ دَانَ نَفْسَهٗ وَعَمِلَ لِمَا بَعْدَ الْمَوْتِ وَالْاَحْمَقُ مَنْ اَتْبَعَ نَفْسَهٗ هَوَاهَا وَتَمَنّٰى عَلَى اللّٰهِ"

या'नी अ़क़्ल मन्द और समझदार वोह है जो अपने नफ़्स का मुह़ासबा करे और मौत के बा'द वाली ज़िन्दगी के लिये अ़मल करे और अह़मक़ व नादान वोह है जो नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी करे और (नफ़्सानी ख़्वाहिशात व मम्नूआ़त को तर्क किये बिग़ैर) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अ़फ़्वो दर गुज़र और जन्नत की उम्मीद रखे।"(1)

हुसूले इ़ल्म व मुत़ालए़ का मक़्सद

ऐ प्यारे बेटे !

तुम कितनी ही रातें जाग कर हुसूले इ़ल्म में मश्ग़ूल व मसरूफ़ रहे...... और (इस कुतुब बीनी के शौक़ में) अपने ऊपर नींद को ह़राम किये रखा...... मैं नहीं जानता कि तुम्हारी इस मेह़नतो मशक़्क़त का सबब क्या था ?...... अगर तुम्हारी निय्यत दुन्यवी साज़ो सामान और मालो दौलत ह़ासिल करने की थी तो (कान खोल कर सुन लो !) तुम्हारे लिये हलाकत व बरबादी है...... और अगर उन शब बेदारियों में तुम्हारी निय्यत येह थी कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी शरीअ़त का पैग़ाम आ़म करोगे...... अपने किरदार व अख़्लाक़ को सुन्नतों के सांचे में ढालोगे...... और

1......سنن الترمذی، کتاب صفة القیامة، باب(ت ۹۰)، الحدیث: ۲٤٦۷، ج٤، ص۲۰۸.

हमेशा बुराई की त़रफ़ बुलाने वाले नफ़्से अम्मारा की शरारतों से बचने की भरपूर कोशिश करोगे तो तुम्हें मुबारक हो...... और सआ़दत मन्दी नसीब हो।

किसी शाइ़र ने सच ही कहा है :

سَهَرُ الْعُيُوْنِ لِغَيْرِ وَجْهِكَ ضَائِعٌ　　وَبُكَاؤُهُنَّ لِغَيْرِ فَقْدِكَ بَاطِلٌ

तरजमा : तेरे रुख़े ज़ैबा के दीदार के इ़लावा किसी ग़ैर के लिये इन आंखों का जागते रहना बेकार है और तेरे इ़लावा किसी और के फ़िराक़ में इन का रोना बात़िल व अ़बस है।

ऐ नूरे नज़र !

عِشْ مَا شِئْتَ فَإِنَّكَ مَيِّتٌ وَ أَحْبِبْ مَا شِئْتَ فَإِنَّكَ مُفَارِقُهٗ وَ اعْمَلْ مَا شِئْتَ فَإِنَّكَ تُجْزٰى بِهٖ

या'नी : जैसे चाहे ज़िन्दगी गुज़ारो आख़िरे कार तुम्हें मरना है...... जिस से चाहो मह़ब्बत करो एक न एक दिन तुम उस से जुदा हो जाओगे...... और जैसा चाहे अ़मल करो बिल आख़िर इस का बदला ज़रूर दिये जाओगे।

ऐ लख़्ते जिगर !

इ़ल्मे कलाम व मुनाज़रा, इ़ल्मे त़िब, इ़ल्मे दवावीन व अश्आ़र, इ़ल्मे नुजूम व उ़रूज़, इ़ल्मे नह़्व व सर्फ़ (जिन के ह़ासिल करने का मक़्सद अगर दुन्यवी शोहरत का ह़ुसूल और लोगों पर अपनी बड़ाई व बरतरी का इज़्हार था) तो सिवाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी में अपनी उ़म्र का क़ीमती वक़्त ज़ाएअ़ करने के तेरे हाथ क्या आया ?

मय्यित से 40 सुवालात

मैं ने इन्जीले मुक़द्दस में येह लिखा हुवा पाया कि ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया : मय्यित को चारपाई पर रख कर क़ब्र तक लाने के दौरान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मय्यित से **40** सुवालात करता है...... इन में से पहला सुवाल येह होता है : ''ऐ मेरे बन्दे ! लोगों

को ह़सीनो जमील नज़र आने के लिये बरसों तू ख़ुद को संवारता रहा लेकिन जिस चीज़ (या'नी दिल) पर मेरी नज़र (रह़मत) होती है उसे तूने एक लम्ह़ा भी पाको साफ़ न किया।''

(ऐ इन्सान !) हर रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरे दिल पर नज़रे करम फ़रमाता है और इर्शाद फ़रमाता है : ''तू मेरे ग़ैर की ख़ातिर क्या कुछ कर गुज़रता है...... ह़ालां कि तुझे मेरी ने'मतों ने घेर रखा है (फिर भी मेरी फ़रमां बरदारी की त़रफ़ माइल नहीं होता ?)...... क्या तू बहरा हो चुका है ?...... क्या तुझे कुछ सुनाई नहीं देता ?''

ग़ैर मुफ़ीद और बे फ़ाएदा इ़ल्म

ऐ प्यारे बेटे !

अ़मल के बिग़ैर इ़ल्म पागल पन और दीवानगी से कम नहीं और इ़ल्म के बिग़ैर अ़मल की कुछ ह़ैसिय्यत नहीं[1]।...... (इस बात को गिरह

1...... बिग़ैर इ़ल्म के न सिर्फ़ येह कि इ़बादात उ़मूमन दुरुस्त त़रीक़े पर अदा होने से रह जाती हैं बल्कि बसा अवक़ात बन्दा सख़्त गुनहगार होता है। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 651 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''**मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत**'' सफ़ह़ा 355 पर मुजद्दिदे आ'ज़म, इमामे अहले सुन्नत, ह़ज़रते सय्यिदुना आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن (मुतवफ़्फ़ा 1340 हि.) फ़रमाते हैं : ''ह़दीस में इर्शाद हुवा : اَلْمُتَعَبِّدُ بِغَيْرِ فِقْهٍ كَالْحِمَارِ فِى الطَّاحُوْن (बिग़ैर फ़िक़्ह के आ़बिद बनने वाला ऐसा है जैसे चक्की में गधा)। (كنزالعمال، كتاب العلم، الباب الاول فى الترغيب فيه، الحديث:٢٨٧٠٥، ج٥، الجزء العاشر، ص٦١) बिग़ैर फ़िक़्ह के आ़बिद बनने वाला (फ़रमाया), आ़बिद न फ़रमाया बल्कि आ़बिद बनने वाला फ़रमाया या'नी बिग़ैर फ़िक़्ह के इ़बादत हो ही नहीं सकती, जो (बिग़ैर फ़िक़्ह के) आ़बिद बनता है वोह ऐसा है जैसे चक्की में गधा कि मेह़नते शाक़्क़ा करे और ह़ासिल कुछ नहीं।''

नीज़ फ़क़ीहे मिल्लत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती जलालुद्दीन अह़मद अमजदी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى (मुतवफ़्फ़ा 1421 हि.) इस ह़दीसे पाक के तह़त यूं तह़रीर फ़रमाते हैं : ''मत़लब येह है कि जैसे पहले ज़माने में आटे की चक्की को गधा चलाया करता था मगर आटा खाने के लिये उस को नहीं मिलता था ऐसे ही बिग़ैर फ़िक़्ह या'नी मसाइले शरइय्या की रिआ़यत के बिग़ैर जो इ़बादत की मशक़्क़त उठाता है उसे कुछ सवाब नहीं मिलता।''

(इ़ल्म और उ़लमा, स. 58)

से बांध लो ! कि) जो इ़ल्म आज तुम्हें गुनाहों से दूर कर सका न **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त (व इ़बादत) का शौक़ पैदा कर सका येह कल क़ियामत में तुम्हें जहन्नम की (भड़क्ती हुई) आग से भी नहीं बचा सकेगा...... अगर आज तुम ने नेक अ़मल न किया और (सुन्नतों को अपना कर) गुज़रे हुए वक़्त का तदारुक न किया, तो कल क़ियामत में तुम्हारी एक ही पुकार होगी :

فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا
(پ۲۱،السّجدہ: ۱۲)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : हमें फिर भेज कि नेक अ़मल करें।

तो तुझे जवाब दिया जाएगा : "ऐ अह़मक़ व नादान ! तू वहीं से तो आ रहा है।"

ऐ लख़्ते जिगर !

रूह़ में हिम्मत पैदा करो...... नफ़्स के ख़िलाफ़ जिहाद करो...... और मौत को अपने क़रीब तर जानो...... क्यूं कि तुम्हारी मन्ज़िल क़ब्र है...... और क़ब्रिस्तान वाले हर लम्ह़ा तुम्हारे इन्तिज़ार में हैं कि तुम कब इन के पास पहुंचोगे ?...... ख़बरदार ! ख़बरदार ! बिग़ैर ज़ादे राह के उन के पास जाने से डरो।

सआ़दत मन्द और बद बख़्त

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इर्शाद फ़रमाते हैं : "येह जिस्म परिन्दों (या'नी ऐसी सआ़दत मन्द रूह़ों) के लिये पिंजरे हैं (जो हर लम्ह़ा आ़लमे बाला की जानिब परवाज़ के लिये बेताब रहती हैं) या येह जिस्म जानवरों (या'नी ऐसी रूह़ों) के लिये अस्त़बल हैं (जो नेक आ'माल से दूर हैं)।"

पस अपनी ज़ात में ग़ौर करो कि इन दोनों में से तुम्हारा तअ़ल्लुक़

किस के साथ है ?...... अगर तुम आ़लमे बाला की जानिब परवाज़ के लिये बेताब परिन्दों में से हो तो जब (मौत के वक़्त) येह मस्हूर व ख़ुश कुन आवाज़ सुनो :

ارْجِعِیْۤ اِلٰى رَبِّكِ (پ۳۰،الفجر:۲۸)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अपने रब की त़रफ़ वापस हो।

तो फ़ौरन बुलन्दियों की त़रफ़ परवाज़ करते हुए जन्नत के आ'ला मक़ाम पर जा पहुंचना। चुनान्चे,

रह़मते आ़लमिय्यान, सरदारे दो जहान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''اِهْتَزَّ عَرْشُ الرَّحْمٰنِ لِمَوْتِ سَعْدِ بْنِ مُعَاذ या'नी सा'द बिन मुआ़ज़ की मौत से अ़र्शे रह़मान (फ़रह़त व शादमानी से) झूम उठा।''(1)

और مَعَاذَ الله अगर तुम्हारा शुमार जानवरों में हो जैसा कि फ़रमाने बारी तआ़ला है :

اُولٰٓىٕكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ؕ (پ۹،الاعراف:۱۷۹)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह चोपायों की त़रह़ हैं बल्कि उन से बढ़ कर गुमराह।

तो ऐसी सूरत में इस दुन्या से सीधा जहन्नम की आग में जाने से बे ख़ौफ़ न होना।''

ठन्डा पानी देख कर ग़शी

एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی की ख़िदमत में ठन्डा पानी पेश किया गया। पियाला हाथ में लेते ही आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर ग़शी त़ारी हो गई और पियाला दस्ते मुबारक से नीचे गिर गया। जब कुछ देर बा'द इफ़ाक़ा हुवा तो लोगों ने पूछा : ''ऐ अबू

1......صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب مناقب سعد بن مُعاذ، الحدیث:۳۸۰۳، ج۲، ص۵۶۰.

सईद ! आप को क्या हो गया था ?'' फ़रमाया : ''मुझे दोज़ख़ वालों की वोह इल्तिजाएं याद आ गईं जो वोह जन्नत वालों से करेंगे :

اَنۡ اَفِيۡضُوۡا عَلَيۡنَا مِنَ الۡمَآءِ اَوۡ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ؕ (پ۸،الاعراف: ۵۰)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : कि हमें अपने पानी का कुछ फ़ैज़ दो या उस खाने का जो **अल्लाह** ने तुम्हें दिया।(1)

सिर्फ़ हुसूले इल्म ही काफ़ी नहीं

ऐ प्यारे बेटे !

अगर सिर्फ़ इल्म ह़ासिल करना ही काफ़ी होता और इस पर अ़मल की ज़रूरत न होती तो सुब्ह़े सादिक़ के वक़्त मुनादी का येह ए'लान बे फ़ाएदा होता : ''هَلۡ مِنۡ سَائِلٍ؟هَلۡ مِنۡ تَائِبٍ؟هَلۡ مِنۡ مُّسۡتَغۡفِرٍ؟ या'नी है कोई अपनी ह़ाजत त़लब करने वाला ? है कोई तौबा करने वाला ? है कोई गुनाहों से मुआफ़ी चाहने वाला ?''(2)

एक मर्तबा चन्द सह़ाबए किराम رِضۡوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡهِمۡ اَجۡمَعِيۡن ने रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنۡهُمَا का तज़्किरा किया तो आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''نِعۡمَ الرَّجُلُ عَبۡدُ اللهِ لَوۡ كَانَ يُصَلِّیۡ بِاللَّيۡلِ۔ या'नी अ़ब्दुल्लाह एक अच्छा शख़्स है, क्या ही अच्छा होता कि वोह तहज्जुद भी अदा करता।''(3)

और एक बार ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किसी सह़ाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنۡهُ से इर्शाद फ़रमाया :

1......حلية الاولياء،سلام بن ابی مطيع،الرقم:۸۳۰۱،ج۶،ص۲۰۳.

2......المسندللاما م احمد بن حنبل،مسندابی سعيدالخدری،الحديث:۱۱۲۹۵،ج۴،ص۶۹.

3......صحيح مسلم،كتاب فضائل الصحابة،باب من فضائل عبد الله بن عمر،الحديث:۲۴۷۹،ص۱۳۴۶.

''لَاتُکْثِرِالنَّوْمَ بِاللَّیْلِ فَاِنَّ کَثْرَۃَالنَّوْمِ بِاللَّیْلِ تَدَعُ صَاحِبَہٗ فَقِیْرًایَّوْمَ الْقِیَامَۃِ'' या'नी : रात को ज़ियादा न सोया करो क्यूं कि शब भर सोने वाला (नफ़्ली इबादात न करने के बाइस) बरोज़े क़ियामत (नेकियों के सिलसिले में) फ़क़ीर होगा।''(1)

ऐ नूरे नज़र !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने आ़लीशान : وَمِنَ الَّیْلِ فَتَھَجَّدْ بِہٖ (پ۱۵،بنی اسرائیل: ۷۹) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और रात के कुछ ह़िस्से में तहज्जुद करो।...... येह उस का हुक्म है। और येह फ़रमान : وَبِالْاَسْحَارِھُمْ یَسْتَغْفِرُوْنَ﴿۱۸﴾ (پ۲۶،الذاریات:۱۸) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और पिछली रात इस्तिग़फ़ार करते।...... उस का शुक्र है। (या'नी क़बूलिय्यते तौबा की दलील है)

और येह जो फ़रमाया गया : وَالْمُسْتَغْفِرِیْنَ بِالْاَسْحَارِ﴿۱۷﴾ (پ۳،آلِ عمران:۱۷) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और पिछले पहर से मुआ़फ़ी मांगने वाले।...... येह (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मग़्फ़िरत त़लब करने वालों का) ज़िक्र है।

अल्लाह तआ़ला की पसन्दीदा आवाज़ें

हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : '' ثَلَاثَۃُ اَصْوَاتٍ یُحِبُّھَا اللہُ تَعَالٰی صَوْتَ الدِّیْکِ وَصَوْتَ الَّذِیْ یَقْرَءُ الْقُرْاٰنَ وَصَوْتَ الْمُسْتَغْفِرِیْنَ بِالْاَسْحَارِ या'नी : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को तीन आवाज़ें पसन्द हैं : (1)...... मुर्ग़ की आवाज़ (जो सुब्ह़ नमाज़ के लिये जगाती है) (2)...... तिलावते क़ुरआने पाक की आवाज़ और (3)...... सुब्ह़ सवेरे अपने गुनाहों से मुआ़फ़ी त़लब करने वाले की आवाज़।''(2)

1......شعب الایمان للبیھقی،باب فی تعدیدنعم اللّٰہ وشکرھا،فصل فی النوم وآدابہ، الحدیث:۴۷۴۶،ج۴،ص۱۸۳۔

2......فردس الاخباربمأثورالخطاب،امّ سعد،الحدیث:۲۵۳۸،ج۲،ص۱۰۱۔

फ़िरिश्ते की निदा

हज़रते सय्यिदुना सुफ्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی इर्शाद फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक हवा पैदा फ़रमाई है जो सहरी के वक़्त चलती है और उस वक़्त ज़िक्रे इलाही में मगन और गुनाहों से मुआफ़ी मांगने में मश्गूल खुश नसीबों की आवाज़ों को रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश करती है।"

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने येह भी इर्शाद फ़रमाया कि "रात शुरूअ़ होने पर एक फ़िरिश्ता अ़र्श के नीचे से येह निदा देता है : अब इबादत गुज़ारों को उठ जाना चाहिये...... तो इबादत गुज़ार खड़े हो जाते हैं...... और जितनी देर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहता है, नवाफ़िल अदा करते हैं...... फिर जब आधी रात गुज़र जाती है...... तो फ़िरिश्ता दोबारा निदा करता है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़रमां बरदारों को उठ जाना चाहिये...... तो इताअ़त गुज़ार अपने बिस्तरों से उठ कर सहर तक इबादत में मश्गूल रहते हैं...... और जब सहर का वक़्त होता है...... तो फ़िरिश्ता एक बार फिर निदा देता है : अब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से मग़्फ़िरत चाहने वालों को भी उठ जाना चाहिये...... तो ऐसे खुश नसीब उठ जाते हैं और अपने रब्बे ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ से मग़्फ़िरत तलब करना शुरूअ़ कर देते हैं...... और जब फ़ज्र का वक़्त शुरूअ़ हो जाता है तो फ़िरिश्ता पुकारता है : ऐ ग़ाफ़िलो ! अब तो उठ जाओ...... तो ऐसे लोग अपने बिस्तरों से यूं उठते हैं जैसे मुर्दे हों जिन्हें उन की क़ब्रों से निकाल कर फेला दिया गया है।"

ऐ लख़्ते जिगर !

हज़रते सय्यिदुना लुक़्मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان की नसीहतों में येह भी है कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने बेटे से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ नूरे

नज़र ! कहीं मुर्ग़ तुझ से ज़ियादा अ़क़्ल मन्द साबित न हो कि वोह तो सुब्ह़ सवेरे उठ कर अज़ान दे (अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ को याद करे) और तू (ग़फ़्लत में) पड़ा सोता रह जाए।"(1)

किसी शाइ़र ने क्या ख़ूब कहा है :

لَقَدْ هَتَفَتْ فِیْ جُنْحِ لَیْلٍ حَمَامَةٌ   عَلٰی فَنَنٍ وَھْنًا وَاِنِّی لَنَائِمُ

کَذَبْتُ وَبَیْتِ اللّٰہِ لَوْ کُنْتُ عَاشِقًا   لَمَا سَبَقَتْنِیْ بِالْبُکَاءِ الْحَمَائِمُ

وَ اَزْعَمُ اَنِّیْ ھَائِمٌ ذُوْصَبَابَۃٍ   لِرَبِّیْ فَلَا اَبْکِیْ وَ تَبْکِی الْبَھَائِمُ

तरजमा : (1)...... रात को फ़ाख़्ता शाख़ पर बैठी आवाज़ें लगाती है और मैं ख़्वाबे ग़फ़्लत का शिकार हूं।

(2)....... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं अपने दा'वए इश्क़ में झूटा हूं। अगर मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का सच्चा आ़शिक़ होता तो फ़ाख़्ताएं रोने में मुझ से सब्क़त न ले जातीं।

(3)...... और मेरा गुमाने फ़ासिद था कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ख़ूब मह़ब्बत करने वाला हूं। हाए अफ़्सोस ! कि जानवर भी रोते हैं और मैं मह़ब्बते इलाही का दा'वेदार हो कर भी नहीं रोता।(2)

इत़ाअ़त व इ़बादत की ह़क़ीक़त

ऐ प्यारे बेटे !

इ़ल्म का ह़ासिल येह है कि तुम्हें मा'लूम हो जाए कि इत़ाअ़त व इ़बादत क्या है ?

याद रखो कि अवामिर व नवाही (या'नी फ़र्ज़ व वाजिब और ह़राम व मकरूह) में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की

1......الجامع لاحکام القران،سورۂ آل عمران،تحت الآیۃ:۱۷،ج۳،ص۳۱.

2......دیوان الحماسہ،باب النسیب،الجزء ۲،ص۲۳۲.

इत्तिबाअ़ करने का नाम इत़ाअ़त व इ़बादत है ख़्वाह उन का तअ़ल्लुक़ गुफ़्तार से हो या किरदार से...... या'नी तुम्हारा कुछ बोलना या न बोलना और कुछ करना या न करना सब कुछ शरीअ़त के मुत़ाबिक़ होना चाहिये...... मसलन अगर तुम ईदुल फ़ित्र के दिन या अय्यामे तशरीक़ (या'नी 10, 11, 12, 13 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम) में रोज़े रखोगे तो गुनाहगार होगे...... या ग़स्ब शुदा कपड़ों में नमाज़ पढ़ोगे तो गुनाहगार होगे...... ह़ालां कि रोज़ा हो या नमाज़ इ़बादत ही है (मगर शरीअ़त ने इस अन्दाज़ में इन की इजाज़त नहीं दी)।

ऐ लख़्ते जिगर !

अल ग़रज़ तुम्हारे क़ौल व फ़े'ल को शरीअ़त के मुत़ाबिक़ होना चाहिये...... क्यूं कि जो इ़ल्मो अ़मल शरीअ़त के मुत़ाबिक़ न हो गुमराही है...... और (नाम निहाद) सूफ़ियों की त़ाम्मात[1] व शत़ह़िय्यात[2] से धोका न खाना...... इस लिये कि सुलूक की मन्ज़िलें तो नफ़्स की लज़्ज़तों और ख़्वाहिशात को मुजाहदे की तलवार से काटने से तै़ होती हैं न कि (इन नाम निहाद सूफ़ियों की) बे सरो पा और फ़ुज़ूल बक्वास से

1...... **त़ाम्मात** से मुराद नाम निहाद सूफ़ियों की वोह तावीलात हैं जो वोह बिग़ैर किसी शरई दलील के करते हैं।

2...... यहां हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى नाम निहाद सूफ़ियों की शरीअ़त से टकराने वाली बातों से बचने की नसीह़त फ़रमा रहे हैं : मसलन उन का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ इ़श्क़ व मह़ब्बत के लम्बे चोड़े दा'वे करना और येह कहना कि वोह विसाल इलल ह़क़ के मर्तबे पर फ़ाइज़ हैं वग़ैरा वग़ैरा। शत़ह़िय्यात दर ह़क़ीक़त सूफ़ियों की एक इस्तिलाह़ है। जिस का इस्ति'माल गुमराह लोगों में आ़म हो चुका है। ह़ालां कि ऐसी बातें चन्द सच्चे सूफ़ियों से भी मरवी हैं। लेकिन उन्हों ने येह बातें आ़लमे मदहोशी में कीं और होश में आने के बा'द उन से ज़िक्र किया गया तो उन्हों ने ख़ुद भी ऐसी बातों का न सिर्फ़ इन्कार किया बल्कि तौबा व इस्तिग़फ़ार भी किया है। चुनान्चे, सूफ़ियों के हां इस्ति'माल होने वाली मुख़्तलिफ़ इस्तिलाह़ात बयान करते हुए.....

(क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दोस्त बनने के लिये तुझे पीरे कामिल की तरबियत के मुता़बिक़ मुजाहदा करना पड़ेगा । जब कि किसी बे अ़मल सूफ़ी की शो'बदा बाज़ियों से मुतअस्सिर हो कर इसे अपनी काम्याबी और मन्ज़िल तक रसाई के लिये काफ़ी क़रार देना सिवाए बे वुक़ूफ़ी के कुछ नहीं) और इस बात को भी ब ख़ूबी समझ ले ! ज़बान का बेबाक होना और दिल का ग़फ़्लत व शह्वत से भरा होना और दुन्यावी ख़यालात ही में डूबा रहना शक़ावत व बद बख़्ती की अ़लामत है । जब तक नफ़्स की ख़्वाहिशात को कामिल मुजाहदा व रियाज़त से ख़त्म नहीं करेगा उस वक़्त तक तेरे दिल में मा'रिफ़त के अन्वार नहीं जगमगाएंगे ।

....ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى अपनी किताब "मा'मूलातिल अबरार" में लिखते हैं कि सह्व (होशियारी) व सुक्र (मदहोशी) सूफ़ियाए किराम की येह दो मश्हूर कैफ़िय्यात हैं । अक्सर सूफ़िया तो ऐसे गुज़रे हैं कि मा'रिफ़ते इलाही व विसाले ह़क़ीक़ी की दौलत से मालामाल होने के बा'द उन को मिन जानिबिल्लाह ऐसे वसीअ़ ज़र्फ़ से नवाज़ा गया कि कैफ़िय्यात व अह़्वाल से मग़्लूब हो कर दामने होशो ख़िरद, उन के हाथ से नहीं छूटा और उन की बेदारी व होशियारी में एक लम्ह़े के लिये भी फ़ुतूर नहीं पैदा हुवा । येह लोग "अरबाबे सह्व" कहलाते हैं और बा'ज़ वोह मशाइख़ हैं जो बादए इ़रफ़ाने इलाही से इस दरजए मख़्मूर व सरशार हो जाते हैं कि ग़लबए अह़्वाल व कैफ़िय्यात में दामने अ़क़्लो होश तार तार कर देते हैं और दुन्याए बेदारी व होशियारी से बेज़ार हो कर मस्ती व मदहोशी के आ़लम में रहते हैं । इन बुज़ुर्गों को "अरबाबे सुक्र" के नाम से याद किया जाता है । इन्ही मुअख़्ख़िरुज़्ज़िक्र बुज़ुर्गों से कभी कभी आ़लमे सुक्र व मस्ती में बिला इख़्तियार बा'ज़ ऐसे कलिमात सरज़द हो जाते हैं जो ब ज़ाहिर ख़िलाफ़े शरीअ़त होते हैं, ऐसे ही कलिमात व मक़ालात को इस्तिलाहे सूफ़िया में "शत़ह़िय्यात" कहते हैं । वोह बुज़ुर्ग जिन से शत़ह़िय्यात सरज़द हुईं बहुत क़लील ता'दाद में हुए हैं और येह भी रिवायत है कि शत़ह़िय्यात सरज़द होने के बा'द जब उन के होशो ह़वास बजा हुए हैं तो उन्हों ने न सिर्फ़ उन अक़्वाल से ला इ़ल्मी का इज़्हार किया है बल्कि इज़्हारे बेज़ारी व इस्तिग़फ़ार भी किया । (मा'मूलातिल अबरार, स. 83)

बा'ज़ बातें ज़बान से बयान नहीं हो सकतीं

ऐ प्यारे बेटे !

तुम ने बा'ज़ ऐसे मसाइल मुझ से दरयाफ़्त किये हैं जिन का जवाब तह़रीरी और ज़बानी तौ़र पर पूरी त़रह़ बयान नहीं हो सकता...... अगर तुम इस मर्तबे पर फ़ाइज़ हुए तो ख़ुद ही उन की ह़क़ीक़त जान लोगे...... और अगर ऐसा न हो सका तो उन का जानना मुह़ाल है...... क्यूं कि उन का तअ़ल्लुक़ ज़ौक़ से है और हर वोह शै जिस का तअ़ल्लुक़ ज़ौक़ से हो उसे ज़बानी बयान नहीं किया जा सकता...... जैसे मीठी चीज़ की मिठास और कड़वी चीज़ की कड़वाहट को सिर्फ़ चख कर ही जाना जा सकता है।

मन्क़ूल है कि किसी नामर्द ने अपने दोस्त को तह़रीर किया कि वोह उसे मुजामअ़त की लज़्ज़त से आगाह करे...... तो उस के दोस्त ने जवाबन लिखा कि मैं तो तुझे सिर्फ़ नामर्द समझता था अब मा'लूम हुवा कि नामर्द होने के साथ साथ तू बे वुक़ूफ़ भी है...... क्यूं कि इस की लज़्ज़त का तअ़ल्लुक़ तो ज़ौक़ से है अगर तू क़ुव्वते मुजामअ़त पर क़ादिर हो गया तो इस की लज़्ज़त से भी आश्ना हो जाएगा वरना इसे बयान नहीं किया जा सकता।

ऐ लख़्ते जिगर !

तुम्हारे बा'ज़ मसाइल तो इसी क़िस्म के हैं जैसा कि अभी मैं ने बयान किया लेकिन बा'ज़ मसाइल ऐसे भी हैं जिन का जवाब दिया जा सकता है...... और हम ने उन मसाइल को अपनी किताब "एह़याउल उ़लूम" वग़ैरा में तफ़्सील के साथ ज़िक्र कर दिया है...... अलबत्ता यहां हम उन में से कुछ का ज़िक्र करते हैं और बा'ज़ की जानिब इशारा करते हैं।

सालिक के लिये ज़रूरी बातें

सालिक (मुरीद) के लिये 4 बातें ज़रूरी हैं।

﴾1﴿ ऐसा सहीह़ अ़क़ीदा अपनाना जिस में बिद्अ़त शामिल न हो।

﴾2﴿ ऐसी सच्ची तौबा करना कि फिर गुनाहों की त़रफ़ न पलटे।

﴾3﴿ जो नाराज़ हैं उन्हें राज़ी रखना ताकि इस पर किसी का कोई ह़क़ बाक़ी न रहे।

﴾4﴿ इतना इ़ल्मे दीन ह़ासिल करना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अह़कामात को बेहतर त़रीक़े से अदा कर सके नीज़ इस क़दर उ़लूमे आख़िरत का हु़सूल भी ज़रूरी है जो नजात का बाइ़स बन सके।

चार हज़ार अह़ादीस में से सिर्फ़ एक

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शिबली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं ने **400** उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की ख़िदमत में रह कर **4** हज़ार अह़ादीसे मुबारका पढ़ीं और फिर उन में से सिर्फ़ एक ह़दीस शरीफ़ को मुन्तख़ब किया और उस पर अ़मल करने लगा क्यूं कि मैं ने उस ह़दीसे पाक में ग़ौरो फ़िक्र किया तो अ़ज़ाब से छुटकारा और अपनी नजात व काम्याबी और उ़लूमे अव्वलीनो आख़िरीन को उस में मौजूद पाया। लिहाज़ा उस ह़दीस शरीफ़ को अ़मल के लिये काफ़ी समझा और वोह अ़ज़ीमुश्शान ह़दीसे पाक येह है :

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने किसी सह़ाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से इर्शाद फ़रमाया : ''اِعْمَلْ لِدُنْيَاكَ بِقَدْرِ مَقَامِكَ فِيْهَا وَاعْمَلْ لِاٰخِرَتِكَ بِقَدْرِ بَقَاءِكَ فِيْهَا وَاعْمَلْ لِلّٰهِ بِقَدْرِ حَاجَتِكَ اِلَيْهِ وَاعْمَلْ لِلنَّارِ بِقَدْرِ صَبْرِكَ عَلَيْهَا'' या'नी : जितना दुन्या में रहना है उतना दुन्या के लिये और जितना अ़र्सा आख़िरत में रहना है उतना आख़िरत के लिये अ़मल कर और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये अ़मल (या'नी इ़बादत) कर

जितना कि तू इस का मोह़ताज है और दोज़ख़ की आग के लिये इतना अ़मल (या'नी गुनाह) कर जितना तू बरदाश्त कर सके।"(1)

ऐ नूरे नज़र !

जब तुम इस ह़दीसे पाक पर अ़मल करोगे तो फिर तुम्हें कस्रते इ़ल्म की ज़रूरत ही न रहेगी।

30 सालह दौरे त़ालिबे इ़ल्मी का ख़ुलासा

अ़मल का जज़्बा पाने के लिये एक और ह़िकायत सुनो...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे अ़सम عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡحَكَم ह़ज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی के शागिर्द थे। एक दिन उस्ताज़ साह़िब ने उन से दरयाफ़्त फ़रमाया : "आप 30 साल से मेरी सोह़बत में हैं। इतने अ़र्से में क्या ह़ासिल किया ?" तो ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे अ़सम عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡحَكَم ने अ़र्ज़ की : "मैं ने इ़ल्म के 8 फ़वाइद ह़ासिल किये जो मेरे लिये काफ़ी हैं और मुझे उम्मीद है कि इन पर (इख़्लास व इस्तिक़ामत के साथ) अ़मल की सूरत में मेरी नजात है।" ह़ज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی ने जब उन फ़वाइद के बारे में दरयाफ़्त फ़रमाया तो इन्हों ने वोह फ़वाइद यूं बयान किये :

﴾1﴿...... पहला फ़ाएदा :

मैं ने लोगों को ब नज़रे ग़ौर देखा कि इन में से हर एक का कोई न कोई मह़बूब व मा'शूक़ है जिस से वोह इ़श्क़ो मह़ब्बत का दम भरता है...... लेकिन लोगों के मह़बूब ऐसे हैं कि उन में से कुछ मरज़ुल मौत तक साथ देते हैं और कुछ क़ब्र तक...... फिर तमाम के तमाम वापस लौट जाते हैं और उसे क़ब्र में तन्हा छोड़ देते हैं और उन में से कोई भी उस के

1......تفسیرروح البیان،سورۃ صٓ،تحت الایۃ:۲۹،ج۸،ص۲۵.

साथ क़ब्र में नहीं जाता...... लिहाज़ा मैं ने ग़ौरो फ़िक्र के बा'द दिल में कहा : बन्दे का सब से अच्छा, मह़बूब और बेहतरीन दोस्त तो वोह है जो उस के साथ क़ब्र में जाए और वहां की वह़शत व घबराहट की घड़ियों में उस का मूनिस और ग़म ख़्वार हो...... तो मुझे सिवाए "नेक आ'माल" के कोई इस क़ाबिल नज़र न आया तो मैं ने नेक आ'माल को अपना मह़बूब बना लिया ताकि येह मेरे लिये क़ब्र (की तारीकियों) में चराग़ बन जाएं...... वहां मेरा दिल बहलाएं...... और मुझे तन्हा न छोड़ें ।

﴾2﴿...... दूसरा फ़ाएदा :

मैं ने देखा कि लोग अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी करते हैं और नफ़्सानी ख़्वाहिशात की जानिब बड़ी तेज़ी से बढ़ते हैं...... तो फिर मैं ने रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने अ़ज़ीम में ग़ौर किया :

وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ﴿۴۰﴾ فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَاْوٰى ﴿۴۱﴾ (پ۳۰،النّٰزعٰت: ۴۰، ۴۱)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो अपने रब के हु़ज़ूर खड़े होने से डरा और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका तो बेशक जन्नत ही ठिकाना है ।

और मेरा ईमान है कि क़ुरआने ह़कीम ह़क़ और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का सच्चा कलाम है...... पस मैं ने अपने नफ़्स की मुख़ालफ़त शुरूअ़ कर दी...... रियाज़त व मुजाहदात की त़रफ़ माइल हुवा...... और नफ़्स की कोई ख़्वाहिश पूरी न की यहां तक कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी पर राज़ी हो गया और सरे तस्लीम ख़म कर दिया ।

﴾3﴿...... तीसरा फ़ाएदा :

मैं ने देखा कि हर आदमी दुन्या का मालो दौलत जम्अ़ करने और इसे ज़ख़ीरा करने में मश्ग़ूल है...... तो मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने ला ज़वाल में ग़ौर किया :

مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ؕ (پ١٤،النحل:٩٦)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जो तुम्हारे पास है हो चुकेगा और जो **अल्लाह** के पास है हमेशा रहने वाला है।

पस मैं ने जो कुछ जम्अ़ किया था **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये फुक़रा व मसाकीन में तक़्सीम कर दिया ताकि येह रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ के पास ज़ख़ीरा हो जाए (और मुझे आख़िरत में इस से फ़ाएदा पहुंचे)।

4...... चौथा फ़ाएदा :

मैं ने देखा कि बा'ज़ लोगों के नज़्दीक शानो शौकत और इ़ज़्ज़तो शराफ़त क़ौमों और क़बीलों की कसरत (या'नी ज़ियादा होने) में है। लिहाज़ा वोह ऐसी क़ौम व क़बीले से तअ़ल्लुक़ रखने पर खुद को मुअ़ज़्ज़ज़ व मुकर्रम समझते हैं...... बा'ज़ का गुमान येह है कि इ़ज़्ज़त और शानो शौकत दौलत की फ़रावानी और कस्रते अहलो इ़याल में है। ऐसे लोग अपनी दौलत और औलाद पर फ़ख़्र करते हैं...... बा'ज़ लोग ऐसे हैं जो अपनी इ़ज़्ज़तो शराफ़त दूसरों का माल लूटने, इन पर ज़ुल्म करने और इन का ख़ून बहाने में समझते हैं...... बा'ज़ लोग समझते हैं कि माल ज़ाएअ़ करने और इसराफ़ व फुज़ूल ख़र्ची ही में इ़ज़्ज़त व बुज़ुर्गी पोशीदा है...... फिर मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने ज़ीशान में ग़ौर किया :

اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ (پ٢٦،الحجرات:١٣)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** के यहां तुम में ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोह जो तुम में ज़ियादा परहेज़ गार है।

तो मैं ने तक़्वा और परहेज़ गारी को इख़्तियार किया और पुख़्ता यक़ीन रखा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कलाम ह़क़ और सच है...... और लोगों के गुमान व नज़रिय्यात सब झूटे और बात़िल हैं।

5...... पांचवां फ़ाएदा :

मैं ने देखा कि लोग एक दूसरे की बुराई बयान करते हैं और ख़ूब

ग़ीबत का शिकार होते हैं...... इस के अस्बाब पर ग़ौर किया तो मा'लूम हुवा कि येह सब ह़सद की वज्ह से हो रहा है...... और इस ह़सद की अस्ल वज्ह शानो अ़ज़मत, मालो दौलत और इ़ल्म है तो मैं ने कुरआने करीम की इस आयते मुबारका में ग़ौर किया :

نَحۡنُ قَسَمۡنَا بَیۡنَہُمۡ مَّعِیۡشَتَہُمۡ فِی الۡحَیٰوۃِ الدُّنۡیَا (پ۲۵،الزخرف: ۳۲)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : हम ने इन में इन की ज़ीस्त का सामान दुन्या की ज़िन्दगी में बांटा ।

तो मैं ने इस बात को ब ख़ूबी जान लिया कि मालो दौलत, शानो अ़ज़मत की तक़्सीम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अज़ल ही से फ़रमा दी है (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जिस के लिये जो चाहा मुक़द्दर फ़रमा दिया) इस लिये मैं किसी से ह़सद नहीं करता...... और रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ की तक़्सीम व तक़्दीर पर राज़ी हूं ।

《6》...... छटा फ़ाएदा :

मैं ने लोगों पर निगाह डाली तो उन्हें एक दूसरे से किसी ग़रज़ और सबब की वज्ह से अ़दावत व दुश्मनी करते हुए पाया...... और मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस मुक़द्दस फ़रमान में ख़ूब ग़ौर किया :

اِنَّ الشَّیۡطٰنَ لَکُمۡ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوۡہُ عَدُوًّا ؕ (پ۲۲،فاطر:۶)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक शैत़ान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम भी उसे दुश्मन समझो ।

तो मुझे मा'लूम हो गया कि सिवाए शैत़ान के किसी और से दुश्मनी दुरुस्त नहीं ।

《7》...... सातवां फ़ाएदा :

मैं ने देखा कि हर शख़्स रोज़ी और मआ़श की तलाश में काफ़ी मेह़नत और कोशिश के साथ सरगर्दां है...... और इस सिल्सिले में ह़लाल

व ह़राम की भी तमीज़ नहीं करता...... बल्कि मश्कूक और ह़राम कमाई के ह़ुसूल के लिये ज़लीलो ख़्वार हो रहा है...... लिहाज़ा मैं ने रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़ली में ग़ौर किया :

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِی الْاَرْضِ اِلَّا عَلَی اللّٰهِ رِزْقُهَا (پ۱۲،ھود:٦)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ज़मीन पर चलने वाला कोई ऐसा नहीं जिस का रिज़्क़ **अल्लाह** के ज़िम्मए करम पर न हो।

पस मैं ने यक़ीन कर लिया कि मेरा रिज़्क़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने ज़िम्मए करम पर ले रखा है...... तो मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मश्ग़ूल हो गया...... और ग़ैर के ख़याल को अपने दिल से निकाल दिया।

8 आठवां फ़ाएदा :

मैं ने देखा कि हर शख़्स किसी न किसी पर भरोसा किये हुए है...... किसी का भरोसा दिरहमो दीनार पर है...... किसी का मालो सल्त़नत पर...... किसी का सन्अ़त व ह़िर्फ़त पर...... और कोई तो अपने जैसे लोगों पर भरोसा किये हुए है...... तो मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान से रहनुमाई ह़ासिल हुई :

وَمَنْ یَّتَوَكَّلْ عَلَی اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ؕ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَیْءٍ قَدْرًا ۝۳ (پ۲۸،الطلاق:۳)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो **अल्लाह** पर भरोसा करे तो वोह उसे काफ़ी है बेशक **अल्लाह** अपना काम पूरा करने वाला है बेशक **अल्लाह** ने हर चीज़ का एक अन्दाज़ा रखा है।

पस मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा किया...... वोह मुझे काफ़ी है...... और वोह बेहतरीन कारसाज़ है।

जब ह़ज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने येह 8 फ़वाइद सुने तो इर्शाद फ़रमाया : ऐ ह़ातिम ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को

(इख़्लास व इस्तिक़ामत के साथ) इन पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ से मालामाल फ़रमाए...... मैं ने तौरात, इन्जील, ज़बूर और क़ुरआने मजीद की ता'लीमात में ग़ौर किया तो इन तमाम मुक़द्दस किताबों को इन **8** फ़वाइद पर मुश्तमिल पाया...... तो जिस ख़ुश नसीब ने इन पर अ़मल किया गोया उस ने इन चारों किताबों पर अ़लम किया।

मुर्शिद की अहम्मिय्यत व ज़रूरत

ऐ लख़्ते जिगर !

इन दोनों ह़िकायतों से तुम ने जान लिया होगा कि तुम्हें ज़ियादा और ग़ैर ज़रूरी इ़ल्म की ज़रूरत नहीं (बल्कि अ़मल की ज़रूरत है)...... अब मैं तुम्हें उन उमूर से आगाह करता हूं कि राहे ह़क़ के सालिक (या'नी चलने वाले) पर कौन सी बातें लाज़िम हैं।

येह बात ज़ेह्न नशीन कर लो कि सालिक को रहनुमाई और तरबियत करने वाले एक शैख़ (या'नी मुर्शिदे कामिल) की ज़रूरत होती है...... ताकि वोह अपनी ख़ुसूसी तरबियत से मुरीद के बुरे अख़्लाक़ को जड़ से ख़त्म कर दे और उन की जगह अच्छे अख़्लाक़ का बीज बो दे...... तरबियत की मिसाल बिल्कुल इस त़रह़ है जिस त़रह़ एक किसान खेती बाड़ी के दौरान अपनी फ़स्ल से ग़ैर ज़रूरी घास और जड़ी बूटियां निकाल देता है...... ताकि फ़स्ल की हरयाली और नश्वो नमा में कमी न आए...... इसी त़रह़ राहे ह़क़ के सालिक के लिये एक ऐसे मुर्शिदे कामिल का होना निहायत ही ज़रूरी है जो इस की अह़सन त़रीक़े से तरबियत करे...... और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रास्ते की त़रफ़ इस की रहनुमाई करे...... रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ ने अम्बिया व रुसुल عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को इस लिये मब्ऊ़स फ़रमाया ताकि वोह लोगों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का रास्ता बताएं...... मगर जब आख़िरी रसूल, ह़ुज़ूर ख़ातमुन्नबिय्यीन

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस जहान से पर्दा फ़रमा गए (और नबुव्वत व रिसालत का सिल्सिला आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ख़त्म हुवा) तो इस मन्सबे जलील को खुलफ़ाए राशिदीन رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने बतौरे नाइब संभाल लिया...... और लोगों को राहे ह़क़ पर लाने की सअ्य व कोशिश फ़रमाते रहे।

पीरे कामिल का आ़लिम होना ज़रूरी है :

याद रहे कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नाइब होने के लिये "**पीरे कामिल**" का आ़लिम होना शर्त़ है...... लेकिन इस बात का ख़याल रहे कि हर आ़लिम हुज़ूर ताजदारे दो जहान, मक्की मदनी सुल्त़ान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नाइब बनने की सलाह़िय्यत नहीं रखता।[1]

1...... दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 137 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**आदाबे मुर्शिदे कामिल**" के सफ़ह़ा 14 ता 16 पर है : सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा अफ़्रीक़ा** में तह़रीर फ़रमाते हैं कि मुर्शिद की दो क़िस्में हैं : ﴾1﴿ मुर्शिदे इत्तिसाल ﴾2﴿ मुर्शिदे ईसाल।
﴾1﴿ **मुर्शिदे इत्तिसाल** या'नी जिस के हाथ पर बैअ़त करने से इन्सान का सिल्सिला हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक मुत्तसिल हो जाए इस के लिये चार शराइत़ हैं : **पहली शर्त़ :** मुर्शिद का सिल्सिला बि इत्तिसाले सह़ीह़ (या'नी दुरुस्त वासित़ों के साथ तअ़ल्लुक़) हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक पहुंचता हो। बीच में मुन्क़त़अ़ (या'नी जुदा) न हो कि मुन्क़त़अ़ के ज़रीए़ इत्तिसाल (या'नी तअ़ल्लुक़) ना मुम्किन है...... बा'ज़ लोग बिला बैअ़त (या'नी बिग़ैर मुरीद हुए), मह़ज़ बज़ो'मे विरासत (या'नी वारिस होने के गुमान में) अपने बाप दादा के सज्जादे पर बैठ जाते हैं या...... बैअ़त की थी मगर ख़िलाफ़त न मिली थी, बिला इज़्न (बिग़ैर इजाज़त) मुरीद करना शुरूअ़ कर देते हैं या...... सिल्सिला ही वोह हो कि क़त़्अ़ कर दिया गया, उस में फ़ैज़ न रखा गया, लोग बराए हवस उस में इज़्न व ख़िलाफ़त देते चले आते हैं या...... सिल्सिला फ़ी नफ़्सिही सह़ीह़ था मगर बीच में ऐसा कोई शख़्स वाक़ेअ़ हुवा जो ब वज्हे इन्तिफ़ाए बा'ज़ शराइत़ क़ाबिले बैअ़त न था...... उस से जो शाख़ चली वोह बीच में मुन्क़त़अ़ (या'नी जुदा) है...... इन तमाम सूरतों में इस बैअ़त से हरगिज़ इत्तिसाल (या'नी तअ़ल्लुक़) ह़ासिल न होगा। (बेल से दूध या बांझ से बच्चा मांगने की मत जुदा है)। **दूसरी शर्त़ :** मुर्शिद सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा हो। बद मज़्हब गुमराह का सिल्सिला शैत़ान तक पहुंचेगा न कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم...

पीरे कामिल के 26 अवसाफ़ :

अब हम "**पीरे कामिल**" की बा'ज़ अलामात मुख़्तसरन ज़िक्र करते हैं ताकि हर कोई "**पीरे कामिल**" होने का दा'वा न करे : ﴾1﴿...... "**पीरे कामिल**" वोही है जिस के दिल में दुन्या की महब्बत और इ़ज़्ज़त व मर्तबे की चाहत न हो। ﴾2﴿...... वोह ऐसे मुर्शिदे कामिल से बैअ़त हो जो नूरे बसीरत से माला माल हो। ﴾3﴿...... इस का सिल्सिला रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक मुत्तसिल और मिला हुवा हो। ﴾4﴿...... नेक आ'माल बजा लाने वाला हो। ﴾5﴿...... रियाज़ते नफ़्स का आ़दी हो।

...तक...... आज कल बहुत खुले हुए बद दीनों बल्कि बे दीनों कि जो बैअ़त के सिरे से मुन्किर व दुश्मने औलिया हैं, मक्कारी के साथ पीरी मुरीदी का जाल फेला रखा है...... होशियार ! ख़बरदार ! एह़तियात़ ! एह़तियात़ ! **तीसरी शर्त़ :** मुर्शिद आ़लिम हो। या'नी कम अज़ कम इतना इ़ल्म ज़रूरी है कि बिला किसी इमदाद के अपनी ज़रूरिय्यात के मसाइल किताब से निकाल सके...... कुतुब बीनी (या'नी मुत़ालआ़ कर के) और अफ़्वाहे रिजाल (या'नी लोगों से सुन सुन कर) भी आ़लिम बन सकता है (मत़लब येह है कि फ़ारिगुत्तह़सील होने की सनद न शर्त़ है न काफ़ी बल्कि इ़ल्म होना चाहिये)...... इ़ल्मे फ़िक़्ह (या'नी अह़कामे शरीअ़त) इस की अपनी ज़रूरत के क़ाबिल काफ़ी...... और अ़क़ाइदे अहले सुन्नत से लाज़िमी पूरा वाक़िफ़ हो...... कुफ़्र व इस्लाम, गुमराही व हिदायत के फ़र्क़ का ख़ूब आ़रिफ़ (या'नी जानने वाला) हो। **चौथी शर्त़ :** मुर्शिद फ़ासिके़ मो'लिन (या'नी ए'लानिया गुनाह करने वाला) न हो। इस शर्त़ पर ह़ुसूले इत्तिसाल का तवक़्क़ुफ़ नहीं या'नी ह़ुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से तअ़ल्लुक़ का दारो मदार इस शर्त़ पर नहीं...... कि फ़ुजूरो फ़िस्क़ बाइसे फ़िस्ख़ (मन्सूख़ होने का सबब) नहीं...... मगर पीर की ता'ज़ीम लाज़िम है और फ़ासिक़ की तौहीन वाजिब और दोनों का इज्तिमाअ़ बात़िल (इसे इमामत के लिये आगे करने में इस की ता'ज़ीम है और शरीअ़त में इस की तौहीन वाजिब है)। ﴾2﴿ **मुर्शिदे ईसाल** या'नी शराइते़ मज़्कूरा (या'नी जिन शराइत़ का ज़िक्र किया गया) के साथ (1) मफ़ासिदे नफ़्स (नफ़्स के फ़ितनों) (2) मकाइदे शैत़ान (शैत़ानी चालों) और (3) मसाइदे हवा (नफ़्स के जालों) से आगाह हो (4) दूसरे की तरबियत जानता हो (5) अपने मुतवस्सिल पर शफ़्क़ते ताम्मा रखता हो कि इस के उ़यूब पर इसे मुत्त़लअ़ करे इन का इ़लाज बताए और (6) जो मुश्किलात इस राह में पेश आएं उन्हें ह़ल फ़रमाए।

(फ़तावा अफ़्रीक़ा, स. 138)

﴾6﴿...... या'नी कम खाने ﴾7﴿...... कम सोने ﴾8﴿...... कम बोलने ﴾9﴿...... कस्रते नवाफ़िल ﴾10﴿...... ज़ियादा रोज़े रखने और ﴾11﴿...... ख़ूब सदक़ा व ख़ैरात करने जैसे नेक आ'माल करने वाला हो। ﴾12﴿...... नीज़ वोह "**पीरे कामिल**" अपने शैख़ की कामिल इत्तिबाअ़ के सबब सब्र ﴾13﴿...... नमाज़ ﴾14﴿...... शुक्र ﴾15﴿...... तवक्कुल ﴾16﴿...... यक़ीन ﴾17﴿...... सख़ावत ﴾18﴿...... क़नाअ़त ﴾19﴿...... त़मानिय्यते नफ़्स ﴾20﴿...... हि़ल्म ﴾21﴿...... तवाज़ोअ़ ﴾22﴿...... इ़ल्म ﴾23﴿...... सिद्क़ ﴾24﴿...... वफ़ा ﴾25﴿...... ह़या और ﴾26﴿...... वक़ार व सुकून जैसे पसन्दीदा औसाफ़ का पैकर हो।

पस जो "**पीरे कामिल**" इन औसाफ़ से मुत्तसिफ़ हो वोह हु़ज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अन्वारे मुबारका में से एक नूर बन जाता है और इस क़ाबिल हो जाता है कि उस की इक़्तिदा की जाए। ऐसे "**पीरो मुर्शिद**" का मिलना बहुत ही मुश्किल है...... और अगर (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और) ख़ुश क़िस्मती व सआ़दत मन्दी साथ दे और इन औसाफ़ के ह़ामिल "**पीरे कामिल**" तक रसाई हो जाए और वोह "**पीरे कामिल**" भी इसे अपने मुरीदों में क़बूल फ़रमा ले...... तो अब इस मुरीद के लिये लाज़िमी और ज़रूरी है कि अपने "**पीरे कामिल**" का ज़ाहिर और बात़िन हर त़रह़ से अदबो एह़तिराम बजा लाए।

पीरो मुर्शिद का ज़ाहिरी एह़तिराम :

पीरो मुर्शिद का ज़ाहिरी अदबो एह़तिराम येह है कि

❁...... मुरीद शैख़ से बह़सो मुबाह़सा करे न उस की किसी बात पर ए'तिराज़ करे अगर्चे इस के नाक़िस इ़ल्म के मुत़ाबिक़ शैख़ ग़लत़ी पर हो (बस इसे अपनी कम फ़ह़मी समझे)।

❁...... शैख़ के सामने कुछ बिछा कर न बैठे (कि नुमायां नज़र आए बल्कि इज्ज़ो इन्किसारी का पैकर बना रहे)। अलबत्ता फ़र्ज़ नमाज़ों के वक़्त मुसल्ला बिछा सकता है और नमाज़ से फ़ारिग़ होते ही फ़ौरन लपेट दे।

❁...... शैख़ की मौजूदगी में कस्रते नवाफ़िल से गुरेज़ करे (और पीरे कामिल की सोह़बत व ख़िदमत को बहुत बड़ी सआ़दत समझे)।

❁...... शैख़ के हर हुक्म पर अपनी वुस्अ़त व त़ाक़त के मुत़ाबिक़ अ़मल करे।

पीरो मुर्शिद का बात़िनी एह़तिराम :

बात़िनी एह़तिराम येह है कि सालिक पीरो मुर्शिद की मौजूदगी में जो बातें सुन कर क़बूल कर ले उन की ग़ैर मौजूदगी में अपने क़ौल और फ़े'ल से उन का इन्कार न करे वरना मुनाफ़िक़ कहलाएगा। अगर ऐसा नहीं कर सकता तो बेहतर है कि शैख़ की सोह़बत से कनारा कश हो जाए यहां तक कि इस का ज़ाहिर और बात़िन एक हो जाए।

बद अ़क़ीदा लोगों की सोह़बत से परहेज़ :

सालिक व मुरीद को चाहिये कि बुरे और बद अ़क़ीदा लोगों की सोह़बत से दूर रहे ताकि दिल से शैत़ान इन्सानों और शैत़ान जिन्नों के वस्वसे दूर रहें...... कि शैत़ान के शर से दिल को पाक रखने का येही त़रीक़ा है...... और (मुरीद को चाहिये कि) हर ह़ाल में फ़क़ीरी को अमीरी पर तरजीह़ दे।

तसव्वुफ़ की ह़क़ीक़त

जान लो ! तसव्वुफ़ की दो अहम ख़स्लतें हैं : (1)...... इस्तिक़ामत (2)...... हुस्ने अख़्लाक़। पस जिस ने इस्तिक़ामत इख़्तियार की और लोगों से बुर्दबारी और ख़ुश अख़्लाक़ी से पेश आया तो वोह सूफ़ी है।

﴾1﴿...... इस्तिक़ामत से मुराद येह है कि नफ़्सानी ख़्वाहिश को अपने ही नफ़्स की (उख़्रवी) भलाई के लिये क़ुरबान कर दे ।

﴾2﴿...... और लोगों के साथ हुस्ने अख़्लाक़ से मुराद येह है कि उन पर अपने नफ़्स की ख़्वाहिश और मरज़ी मुसल्लत़ न करे बल्कि नफ़्स को उन की ख़्वाहिश और मरज़ी के मुत़ाबिक़ चलाए जब तक कि वोह शरीअ़त की मुख़ालफ़त न करें (क्यूं कि शरीअ़त की ख़िलाफ़ वर्ज़ी और गुनाह व ना फ़रमानी में मख़्लूक़ की इत़ाअ़त जाइज़ नहीं) ।

बन्दगी की ह़क़ीक़त

ऐ लख़्ते जिगर !

तुम ने मुझ से बन्दगी के मुतअ़ल्लिक़ भी दरयाफ़्त किया है तो जान लो कि बन्दगी तीन चीज़ों का नाम है :

﴾1﴿...... अह़कामे शरीअ़त की पाबन्दी करना ।

﴾2﴿...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तक़्सीम और तक़्दीर पर राज़ी रहना ।

﴾3﴿...... रिज़ाए रब्बुल अनाम की त़लब में अपनी ख़ुशी क़ुरबान कर देना ।

तवक्कुल की ह़क़ीक़त

तुम्हारा एक सुवाल तवक्कुल से मुतअ़ल्लिक़ है...... तवक्कुल येह है कि तुम इस बात पर पुख़्ता यक़ीन रखो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जो वा'दा फ़रमाया है या'नी जो कुछ तुम्हारे मुक़द्दर में लिख दिया है वोह हर ह़ाल में तुम्हें मिल कर रहेगा...... चाहे पूरी दुन्या उस की राह में रुकावट डालने की कोशिश करे...... लेकिन जो तुम्हारी तक़्दीर में नहीं लिखा उस (को ह़ासिल करने) के लिये तुम और सारा जहां मिल कर जितनी चाहे कोशिश कर लो तुम्हें उस से कुछ नहीं मिलेगा ।

इख़्लास की ह़क़ीक़त

तुम ने येह भी पूछा है कि इख़्लास क्या है ?...... इख़्लास येह है कि तुम्हारा हर अ़मल सिर्फ़ और सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये हो...... और उस अ़मल के सबब तुम लोगों की ता'रीफ़ो तौसीफ़ से राह़त मह़सूस करो न ही तुम्हें उन की मज़म्मत की परवा हो ।

रियाकारी और इस का इ़लाज

याद रखो ! रियाकारी मख़्लूक़ को बड़ा समझने के सबब पैदा होती है...... इस का इ़लाज येह है कि तुम लोगों को क़ुदरते इलाही के सामने मुसख़्ख़र (या'नी ताबेअ़) ख़याल करो...... और दिखावे से बचने की ख़ातिर उन्हें जमादात (या'नी पथ्थरों) जैसा समझो कि येह इन की त़रह़ नफ़्अ़ व नुक़्सान पहुंचाने पर क़ादिर नहीं...... क्यूं कि जब तक तुम लोगों को नफ़्अ़ व नुक़्सान पर क़ादिर समझते रहोगे रियाकारी जैसे ख़त़रनाक मरज़ से नहीं बच सकते ।

इ़ल्म पर अ़मल की बरकत

ऐ नूरे नज़र !

तेरे बाक़ी सुवालात ऐसे हैं जिन में से कुछ के जवाबात हमारी तसानीफ़ (या'नी एह़याउल उ़लूम और मिन्हाजुल आ़बिदीन वग़ैरा) में लिखे हुए हैं...... उन को वहां से तलाश कर लो...... और कुछ सुवाल ऐसे हैं जिन का जवाब लिखना मम्नूअ़ है...... लिहाज़ा जितना इ़ल्म तुम्हारे पास है उस पर अ़मल करो ताकि जो नहीं जानते वोह भी तुम पर ज़ाहिर व मुन्कशिफ़ हो जाए...... चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है कि ''مَنْ عَمِلَ بِمَا عَلِمَ وَرَّثَهُ اللّٰهُ عِلْمَ مَا لَمْ يَعْلَمْ'' या'नी : जिस ने अपने इ़ल्म पर अ़मल

किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे वोह इ़ल्म भी अ़ता फ़रमा देगा जो वोह नहीं जानता ।"(1)

ऐ लख़्ते जिगर !

आज के बा'द तुम्हें जो भी मुश्किल पेश आए तो मुझ से सिर्फ़ दिल की ज़बान से पूछना...... चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ
(پ٢٦،الحجرات: ٥)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर वोह सब्र करते यहां तक कि तुम आप उन के पास तशरीफ़ लाते तो येह उन के लिये बेहतर था ।

और ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام के इस इर्शादे पाक से नसीहत ह़ासिल करो :

فَلَا تَسْـَٔلْنِیْ عَنْ شَیْءٍ حَتّٰۤی اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ۠ (پ١٥،الكهف: ٧٠)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो मुझ से किसी बात को न पूछना जब तक मैं ख़ुद उस का ज़िक्र न करूं ।

प्यारे बेटे !

जल्द बाज़ी न करना...... जब मुनासिब वक़्त आएगा सब कुछ तुम पर खोल दिया जाएगा...... और तुम देख लोगे...... चुनान्चे, इर्शादे बारी तआ़ला है :

سَاُورِیْكُمْ اٰیٰتِیْ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْنِ ۝
(پ١٧،الانبياء:٣٧)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अब मैं तुम्हें अपनी निशानियां दिखाऊंगा मुझ से जल्दी न करो ।

लिहाज़ा वक़्त से पहले ऐसे सुवालात मत पूछो !...... और यक़ीन रखो कि (राहे ह़क़ पर) चलते रहने से आख़िरे कार मन्ज़िले मक़्सूद तक पहुंच ही जाओगे...... चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

1......حلية الاولياء،احمد بن ابى الحوارى،الرقم: ١٤٣٢٠،ج١٠،ص١٣.

اَوَلَمۡ یَسِیۡرُوۡا فِی الۡاَرۡضِ فَیَنۡظُرُوۡا (پ ۲۱، روم: ۹) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और क्या इन्हों ने ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते।

ऐ नूरे नज़र !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़मत व जलाल की क़सम ! अगर तुम राहे ह़क़ पर चलते रहे तो हर मन्ज़िल पर अ़जाइबात देखोगे...... और जान व दिल की बाज़ी लगा दो क्यूं कि इस राह की अस्ल जान क़ुरबान करना ही है...... ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی ने अपने एक शागिर्द से इर्शाद फ़रमाया : "अगर जान की बाज़ी लगाने की हिम्मत है तो (गुरौहे सूफ़िया में) आ जाओ...... वरना सूफ़िया वाली गुमनामी व तर्के दुन्या के मुआ़मले की त़रफ़ मत आओ।

आठ अहम मदनी फूल

ऐ जाने अ़ज़ीज़ !

मैं तुम्हें **8** बातों की नसीह़त करता हूं इन को क़बूल कर लो कहीं ऐसा न हो कि मैदाने ह़श्र में तुम्हारा इ़ल्म तुम्हारा दुश्मन बन जाए...... इन **8** बातों में से 4 पर अ़मल करना और 4 को छोड़ देना।

जिन 4 बातों से दूरी लाज़िम है

﴾1﴿...... पहली नसीह़त :

मुनाज़रे से इज्तिनाब : जहां तक हो सके किसी से किसी मस्अले में मुनाज़रा (और बह़सो मुबाह़सा) न करना क्यूं कि इस में बहुत सारी आफ़तें व मुसीबतें हैं...... इस का नुक़्सान, फ़ाएदे से ज़ियादा है...... इस लिये कि बह़सो मुबाह़सा से रिया, तकब्बुर, ह़सद, कीना, बुग़्ज़ो अ़दावत, दुश्मनी और फ़ख़्र जैसी मज़्मूम और बुरी आ़दात पैदा होती हैं।

मुनाज़रे की इजाज़त कब है ?

अगर तुम्हारा किसी शख़्स या किसी क़ौम से किसी मस्अले में इख़्तिलाफ़ हो जाए...... और तुम्हारा इरादा ह़क़ को ज़ाहिर करना हो...... कि ख़ामोश रहने की वज्ह से कहीं ह़क़ ज़ाएअ़ न हो जाए...... तो अब मुनाज़रे व गुफ़्तगू की इजाज़त है...... मगर याद रखो कि इरादे और निय्यत के दुरुस्त होने की दो अ़लामात हैं : (1)...... येह फ़र्क़ न करना कि ह़क़ तुम्हारी ज़बान से ज़ाहिर होता है या किसी दूसरे की। (2)...... कसीर मज्मअ़ के बजाए तन्हाई में इस मस्अले पर बह़स को बेहतर समझना। (और अगर मुआ़मला इस के बर अ़क्स हो तो यक़ीन कर लेना कि शैत़ाने लईन इस ब ज़ाहिर नेक काम की आड़ में तुम्हें काफ़ी सारे ख़त़रात व मुश्किलात में फंसाना चाहता है)।

क़ल्बी अमराज़ में मुब्तला मरीज़ :

अब मैं एक बहुत अहम बात बताता हूं इसे तवज्जोह के साथ सुनो !...... मुश्किलात व मसाइल के बारे में सुवाल करना गोया त़बीब के सामने दिल की बीमारी बयान करना है...... और इस का जवाब देना गोया दिल की बीमारी की इस्लाह़ के लिये कोशिश करना है...... याद रखो कि जाहिल लोग दिल के मरीज़ हैं और उ़लमाए किराम त़बीब और ह़कीम की मानिन्द हैं...... नाक़िस आ़लिम सह़ीह़ इ़लाज नहीं कर सकता और कामिल आ़लिम भी हर मरीज़ का इ़लाज नहीं करता...... बल्कि उसी मरीज़ का इ़लाज करता है जिस के बारे में उम्मीदे ग़ालिब हो कि वोह तजावीज़ व इ़लाज क़बूल करेगा...... और अगर मरीज़ की बीमारी पुरानी और दाइमी हो तो इस का मरज़ इ़लाज क़बूल नहीं करता...... लिहाज़ा समझदार त़बीब वोह है जो इस मौक़अ़ पर कह दे कि "येह मरीज़ इ़लाज क़बूल नहीं करेगा"...... क्यूं कि ऐसे को दवा देने में मश्ग़ूल होना क़ीमती उ़म्र ज़ाएअ़ करने के मुतरादिफ़ है।

जाहिल मरीज़ों की 4 अक़्साम :

जहालत में मुब्तला मरीज़ों की **4** क़िस्में हैं :...... जिन में से एक का इलाज मुम्किन है...... और बाक़ी **3** ला इलाज हैं ।

﴾1﴿...... पहला मरीज़ :

ह़सद का शिकार : ना क़ाबिले इलाज मरीज़ों में से पहला मरीज़ वोह है जिस का सुवाल और ए'तिराज़ बुग़्ज़ो ह़सद की ग़रज़ से होता है...... तुम जब भी इसे बड़े अच्छे त़रीक़े और निहायत ही फ़साह़त व वज़ाह़त से जवाब दोगे...... तो तुम्हारे जवाब से इस के बुग़्ज़ो अ़दावत और ह़सद में मज़ीद इज़ाफ़ा ही होता जाएगा...... लिहाज़ा बेहतरी येही है कि इस का जवाब न दो...... जैसा कि कहा गया है :

كُلُّ الْعَدَاوَةِ قَدْ تُرْجٰى اِزَالَتُهَا   اِلَّا عَدَاوَةَ مَنْ عَادَاكَ عَنْ حَسَدٍ

तरजमा : हर अ़दावत के ख़ातिमे की उम्मीद की जा सकती है । मगर जिस दुश्मनी की बुन्याद ह़सद पर हो उस का ख़ातिमा मुम्किन नहीं ।

पस ऐसे मरीज़ को उस के ह़ाल पर छोड़ दो...... इर्शादे बारी तआ़ला है :

فَاَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى ﳔ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ اِلَّا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٢٩﴾ (پ٢٧، النجم: ٢٩)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो तुम उस से मुंह फेर लो जो हमारी याद से फिरा और उस ने न चाही मगर दुन्या की ज़िन्दगी ।

ह़ासिद अपने हर क़ौल और फ़े'ल से अपने इ़ल्म की खेती को जलाता है । चुनान्चे,

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "اَلْحَسَدُ يَاْكُلُ الْحَسَنَاتِ كَمَا تَاْكُلُ النَّارُ الْحَطَبَ या'नी : ह़सद नेकियों को यूं खा जाता है जैसे आग ख़ुश्क लकड़ियों को खा जाती है ।"(1)

1......سنن ابن ماجه، كتاب الزهد، باب الحسد، الحديث: ٤٢١٠، ج٤، ص٧٤٣.

﴾2﴿...... दूसरा मरीज़ :

हमाक़त का शिकार : ना क़ाबिले इलाज मरीज़ों में से दूसरा वोह है जिस की बीमारी का सबब हमाक़त हो...... क्यूं कि हमाक़त का इलाज भी मुम्किन नहीं...... जैसा कि हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का इर्शादे मुबारक है : ''اِنِّی مَاعَجَزْتُ عَنْ اِحْیَاءِ الْمَوْتٰی وَقَدْ عَجَزْتُ مِنْ مُّعَالَجَۃِ الْاَحْمَق या'नी : मैं मुर्दों को तो ज़िन्दा कर सकता हूं मगर अहमक़ का इलाज नहीं कर सकता।''...... अहमक़ इन्सान कुछ अर्सा त़लबे इल्म में मशग़ूल होता है और चन्द शरई और अ़क़्ली उ़लूम ह़ासिल कर के अपनी हमाक़त के बाइस उन जय्यिद उ़लमाए किराम पर सुवालात व ए'तिराज़ात करने लगता है जिन्हों ने अपनी उ़म्रे अ़ज़ीज़ उ़लूमे शरइय्या व अ़क़्लिय्या की ख़िदमत में सर्फ़ की होती है।

हक़ीक़त से ना आश्ना येह अहमक़ गुमान करता है कि ''जो बात मैं न समझ सका हर बड़ा आ़लिम इस के समझने से क़ासिर है।''...... पस इस अहमक़ को जब इतना भी इल्म नहीं तो इस का ए'तिराज़ सरासर हमाक़त व नादानी पर ही मुश्तमिल होगा...... लिहाज़ा बेहतर येही है कि ऐसे शख़्स के सुवाल का जवाब न दिया जाए।

﴾3﴿...... तीसरा मरीज़ :

कम अ़क़्ली का शिकार : तीसरी क़िस्म का ला इलाज मरीज़ वोह है जो हक़ का मुतलाशी हो...... बुज़ुर्गों की जिन बातों को समझ नहीं पाता उन को अपनी कोताह फ़हमी का नतीजा क़रार देता है...... और उस का सुवाल सीखने की ग़रज़ से होता है...... लेकिन कुन्द ज़ेहन और कम अ़क़्ल होने के बाइस हक़ीक़त जानने की सलाहिय्यत नहीं रखता...... लिहाज़ा ऐसे शख़्स को भी जवाब न देने ही में आ़फ़िय्यत है...... जैसा कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे

अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : ''نَحْنُ مَعَاشِرَ الْاَنْبِيَاءِ اُمِرْنَا اَنْ نُكَلِّمَ النَّاسَ عَلٰى قَدْرِ عُقُوْلِهِم'' या'नी : हम गुरौहे अम्बिया (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) को हुक्म दिया गया है कि लोगों से उन की अ़क़्लों के मुत़ाबिक़ कलाम करें।''(1)

《4》...... चौथा मरीज़ :

नसीह़त का त़लब गार : चौथी क़िस्म के मरीज़ का इलाज मुम्किन है...... येह ऐसा मरीज़ है जो रुश्दो हिदायत का त़लब गार हो...... अ़क़्ल मन्द और मुआ़मला फ़ह्म हो...... ह़सद और ग़ज़ब व गुस्सा उस पर ग़ालिब न हों...... शह्वत व नफ़्स परस्ती, जाहो जलाल और मालो दौलत की मह़ब्बत से उस का दिल ख़ाली हो...... राहे ह़क़ और सीधे रास्ते का त़ालिब हो...... उस का सुवाल और ए'तिराज़ ह़सद, परेशान करने और आज़्माइश की वज्ह से न हो...... तो ऐसे आदमी का मरज़ (या'नी जहालत) क़ाबिले इलाज है...... जाइज़ है कि ऐसे शख़्स के सुवाल का जवाब दिया जाए...... बल्कि इस का मस्अला ह़ल करना वाजिब है।

वा'ज़ो बयान की ह़क़ीक़त

《2》 दूसरी नसीह़त :

जिन 4 बातों से दूर रहना ज़रूरी है उन में से दूसरी येह है कि (ख़्वाहिशे नफ़्सानी की वज्ह से) वाइज़ो नासेह़ बनने से इज्तिनाब करना...... क्यूं कि इस में बड़ी आफ़तें और नुक़्सान हैं...... हां ! जब अपने कहे पर खुद अ़मल करने लगो तो उस वक़्त लोगों को वा'ज़ कर सकते हो (क्यूं कि बा अ़मल बा असर होता है)...... और ख़ूब ग़ौर करो इस फ़रमाने आ़लीशान में जो ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से फ़रमाया

1......تفسیر السلمی، سورۃ النحل، تحت الآیۃ:۱۲۵، ج۱، ص۳۷۷.

गया : ''يَا ابْنَ مَرْيَمَ اِعِظْ نَفْسَكَ فَاِنِ اتَّعَظْتَ فَعِظِ النَّاسَ وَاِلَّا فَاسْتَحِيِيْ مِنْ رَّبِّكَ'' या'नी : ऐ इब्ने मरयम ! अपने आप को नसीह़त करो । अगर तुम ने नसीह़त क़बूल कर ली तो फिर लोगों को नसीह़त करना वरना अपने रब से ह़या करो ।''(1)

वा'ज़ो नसीह़त में दो बातों से परहेज़ :

अगर तुम्हें वा'ज़ो बयान करना ही पड़े तो दो बातों से इज्तिनाब करना :

﴾1﴿...... **पहली बात :** वा'ज़ो बयान में ख़ुश कुन इबारात...... बे फ़ाएदा इशारात...... ग़ैर मुस्तनद वाक़िआ़त...... और फ़ुज़ूल शे'रो शाइरी के ज़रीए़ तसन्नोअ़ और बनावट से परहेज़ करना...... क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तसन्नोअ़ और बनावट से काम लेने वालों को ना पसन्द फ़रमाता है...... और कलाम में तकल्लुफ़ या नुमूदो नुमाइश का ह़द से तजावुज़ करना बात़िन के ख़राब होने और दिल की ग़फ़्लत पर दलालत करता है...... बयान का मक़्सद (अपनी क़ाबिलिय्यत का इज़्हार नहीं बल्कि) येह है कि सुनने वाला आख़िरत की तकालीफ़ व अ़ज़ाब और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में होने वाली कोताहियां याद करे...... अपनी उ़म्र के बेकार कामों में ज़ाएअ़ होने पर अफ़्सोस करे...... और पेश आने वाले दुश्वार गुज़ार मराह़िल के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करे कि (اَلْعِيَاذُ بِاللّٰه) अगर ईमान पर ख़ातिमा न हुवा तो क्या बनेगा ?...... मलकुल मौत (ह़ज़रते सय्यिदुना इ़ज़राईल) عَلَيْهِ السَّلَام जब रूह़ क़ब्ज़ फ़रमाएंगे तो ह़ालत कैसी होगी ?...... क्या मुन्कर नकीर के सुवालों के जवाबात देने की त़ाक़त व हिम्मत है ?...... क्या क़ियामत के दिन और ह़श्र के मैदान में अपनी ह़ालत की बेहतरी का एहतिमाम कर लिया है ?...... और क्या पुल सिरात़ को आसानी से पार कर लेगा या ''**हावियह**'' (या'नी नारे दोज़ख़)

1......الزھدللامام احمدبن حنبل،من مواعظ عیسی،الحدیث:۳۰۰،ص۹۳.

में गिर जाएगा ?

अल ग़रज़ बयान सुनने वाले के दिल में बयान कर्दा मुआ़मलात की याद हमेशा आती रहे...... और उसे बे क़रार करती रहे...... तो ऐसे जज़्बात के जोश...... और इन मसाइबो आलाम पर रोने का नाम "**बयान**" है...... और लोगों को इन मुआ़मलात की त़रफ़ तवज्जोह दिलाना...... और उन की कोताहियों पर उन्हें तम्बीह करते हुए उन के ऐ़बों से उन्हें आगाह करना...... इस त़रह़ हो कि इज्तिमाअ़ में बैठे लोगों पर रिक्क़त त़ारी हो...... और (क़ब्रो ह़श्र के) येह मसाइबो आलाम उन्हें अफ़्सुर्दा व ग़मज़दा कर दें...... ताकि जहां तक हो सके वोह (नेकियां कर के) गुज़री हुई उ़म्र की तलाफ़ी करें...... और जो अय्याम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी में बसर किये उन पर ख़ूब ह़स्रतो पशेमानी का इज़्हार करें...... इस त़रीक़े पर जामेअ़ कलाम को "**वा'ज़**" कहा जाता है।

मसलन : अगर दरिया में तुग़यानी हो और सैलाब का रुख़ किसी के घर की त़रफ़ हो...... और इत्तिफ़ाक़ से वोह अपने अहले ख़ाना समेत घर में मौजूद हो...... तो यक़ीनन तुम येही कहोगे : बचो ! जल्दी करो !...... इन ख़त़रनाक लहरों से बचने की कोशिश करो...... और क्या तेरा दिल येह चाहेगा कि इस नाज़ुक व पुरख़त़र मौक़अ़ पर साह़िबे ख़ाना को पुर तकल्लुफ़ इ़बारात...... तसन्नोअ़ व बनावट से भरपूर निकात और इशारों से ख़बर दे ?...... ज़ाहिर है तू ऐसा कभी नहीं चाहेगा...... (और न ही ऐसी नादानी और बे वुक़ूफ़ी का मुज़ाहरा करेगा) पस येही ह़ाल वाइ़ज़ व मुबल्लिग़ का है...... इसे भी चाहिये कि वोह पुर तकल्लुफ़ इ़बारात और तसन्नोअ़ व बनावट से परहेज़ करे।

﴾2﴿...... दूसरी बात : वा'ज़ो बयान करने में हरगिज़ तुम्हारी निय्यत और ख़्वाहिश येह न हो कि लोगों में वाह वाह के ना'रे बुलन्द हों...... इन

पर वज्द की कैफ़िय्यत त़ारी हो...... वोह गिरेबां चाक कर दें...... और हर त़रफ़ येह शोर हो कि कैसी ज़बर दस्त मह़फ़िल है...... क्यूं कि ऐसी ख़्वाहिश दुन्या की त़रफ़ झुकाव और रियाकारी की अ़लामत है...... जो ह़क़ से ग़ाफ़िल होने की वज्ह से पैदा होती है...... बल्कि तुम्हारा अ़ज़्मो इरादा येह होना चाहिये कि (तुम अपने वा'ज़ो बयान के ज़रीए़) लोगों को दुन्या से आख़िरत की त़रफ़ राग़िब कर दो...... गुनाहों से नेकियों की त़रफ़...... ह़िर्सो लालच से ज़ोह्द (या'नी दुन्या से बे रग़्बती) की त़रफ़...... बुख़्ल व कन्जूसी से सख़ावत की त़रफ़...... दुन्या के धोके से तक़्वा व परहेज़ गारी की त़रफ़...... (रियाकारी से इख़्लास की त़रफ़...... तकब्बुर से आ़जिज़ी व इन्किसारी की त़रफ़...... और ग़फ़्लत से बेदारी की त़रफ़) माइल करने की कोशिश करो...... उन के दिलों में आख़िरत की मह़ब्बत पैदा कर के दुन्या को उन की नज़रों में हेच (या'नी क़ाबिले नफ़रत) बना दो...... और उन्हें इ़बादत और ज़ोह्द के इ़ल्म से मालामाल कर दो...... क्यूं कि इन्सान की त़बीअ़त में इस बात का ग़लबा है कि वोह शरीअ़ते मुत़ह्हरा की सीधी राह से फिर कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी वाले कामों और बेहूदा आ़दातो अत़्वार में जल्द मश्ग़ूल हो जाता है।

लिहाज़ा लोगों के दिलों में ख़ौफ़े ख़ुदा और तक़्वा व परहेज़ गारी पैदा करो...... और उन्हें (वक़्ते नज़्अ़ और क़ब्रो आख़िरत में) पेश आने वाले ख़त़रात व मुश्किलात से हर मुम्किन त़रीक़े से डराने की कोशिश करो...... शायद ऐसा करने से उन के ज़ाहिरी वा बात़िनी मुआ़मलात में तब्दीली रूनुमा हो...... और वोह (सच्ची तौबा कर के) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत व इत़ाअ़त में शौक़ो रग़्बत अपनाएं...... और मा'सियत व ना फ़रमानी से बेज़ारी इख़्तियार करें कि येही वा'ज़ो बयान का त़रीक़ा है।

हर वोह वा'ज़ो बयान जिस में येह ख़ूबियां न हों तो वोह वाइ़ज़

व मुबल्लिग़ और सुनने वालों के लिये वबाल का बाइ़स है...... बल्कि यहां तक मन्क़ूल है कि ऐसा वाइ़ज़ रंग बदलने वाला जिन्न और शैत़ान है जो लोगों को सीधी राह से दूर कर के उन्हें हलाकत व रुस्वाई और तबाही व बरबादी के गढ़े में फेंक देता है...... पस लोगों पर लाज़िम है कि वोह ऐसे वाइ़ज़ से दूर भागें क्यूं कि दीन को जितना नुक़्सान ऐसे वाइ़ज़ पहुंचाते हैं इतना शैत़ान भी नहीं पहुंचाता...... लिहाज़ा जो क़ुदरत व त़ाक़त रखता हो उस पर लाज़िम है कि वोह ऐसे (फ़ितना व फ़साद फैलाने वाले) वाइ़ज़ को मुसल्मानों के मिम्बर से नीचे उतार दे और उसे ऐसा (वा'ज़ो बयान) करने से रोक दे...... क्यूं कि ऐसा करना भी اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر (या'नी नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने) में दाख़िल है।

उमरा से मेलजोल का नुक़्सान

﴾3﴿...... तीसरी नसीह़त :

जिन चार बातों से दूर रहना है उन में से तीसरी येह है कि तुम उमरा व सलात़ीन से मेलजोल रखो न उन को देखो...... क्यूं कि उन की त़रफ़ देखना...... उन के पास बैठना...... उन की हमनशीनी इख़्तियार करना बहुत बड़ी आफ़त है...... और अगर कभी उन के साथ मिल बैठने का इत्तिफ़ाक़ हो तो हरगिज़ हरगिज़ उन की ता'रीफ़ो तौसीफ़ न करना...... इस लिये कि जब किसी ज़ालिम और फ़ासिक़ की ता'रीफ़ की जाती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सख़्त नाराज़ होता है...... और जो ज़ालिमों और फ़ासिक़ों की दराज़िये उ़म्र की दुआ़ करता है (نَعُوْذُبِالله) वोह चाहता है कि ज़मीन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी हो।

उमरा के तोह़फ़े या शैत़ान का वार ?

﴾4﴿...... चौथी नसीह़त :

मुमानअ़त वाली बातों में से आख़िरी येह है कि उमरा

(ह़ाकिमों और सरदारों) से किसी क़िस्म के तह़ाइफ़ व नज़राने क़बूल न करना...... अगर्चे तुम्हें मा'लूम हो कि येह ह़लाल की कमाई से पेश किये गए हैं...... इस लिये कि ऐसे लोगों से लालच व त़मअ़ रखना दीन में बिगाड़ पैदा करता है...... (इस का नतीजा येह होता है कि) उन के लिये दिल में नर्म गोशा, ज़ुल्म में तआ़वुन और त़रफ़दारी जैसे जज़्बात पैदा होते हैं...... और येह सब कुछ दीन में बिगाड़ व फ़साद ही तो है...... इस का कम से कम नुक़्सान येह है कि जब तुम उन के तह़ाइफ़ व नज़राने क़बूल करोगे...... और उन के मन्सब से फ़ाएदा उठाओगे तो लाज़िमन उन से मह़ब्बत भी करने लगोगे...... और आदमी जिस से मह़ब्बत करता है उस की दराज़िये उ़म्र और सलामती व बक़ा भी चाहने लगता है...... और ज़ालिम की सलामती व बक़ा को पसन्द करना दर ह़क़ीक़त मख़्लूक़े ख़ुदा पर ज़ुल्म और दुन्या को बरबाद करने का इरादा है...... लिहाज़ा इस से बढ़ कर दीन और आख़िरत के लिये कौन सी चीज़ नुक़्सान देह हो सकती है ?

ख़बरदार ! होशियार ! शैत़ाने लईन व मरदूद के फ़रेब में मत आना...... और न ही उन लोगों के फ़रेब में आना जो कहते हैं कि **“इन (उमरा) से दिरहमो दीनार ले कर फ़ुक़रा व मसाकीन में तक़्सीम करना बेहतर है क्यूं कि उमरा अपना माल ना फ़रमानी और गुनाहों के कामों में ख़र्च करते हैं । लिहाज़ा इसी माल को ग़रीब व नादार मुसल्मानों पर ख़र्च करना इस से कहीं बेहतर है ।”**...... शैत़ान मल्ऊ़न इस वार से न जाने कितने लोगों को तबाहो बरबाद कर चुका है...... इस बह़्स को मज़ीद दीगर आफ़तों की तफ़्सील के साथ हम ने **“एह़याउल उ़लूम”** में ज़िक्र कर दिया है...... तफ़्सील के लिये वहां से देख लो ।

जिन 4 बातों पर अ़मल करना है
अल्लाह तआ़ला से बन्दे का मुआ़मला

﴾5﴿...... पांचवीं नसीह़त :

तुम्हारा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुआ़मला इस त़रह़ होना चाहिये जैसा कि अगर तुम्हारा गुलाम तुम्हारे साथ ऐसा मुआ़मला करता तो तुम उस से खुश हो जाते और इस पर क़ल्बी नाराज़ी और गुस्से का इज़्हार नहीं करते...... और ऐसा मुआ़मला जो तुम्हारा गुलाम तुम्हारे लिये करे और तुम इस पर राज़ी नहीं होते तो फिर खुद भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये ऐसा मुआ़मला करने पर राज़ी मत होना जो तुम्हारा मालिके ह़क़ीक़ी है।

बन्दों से मुआ़मला

﴾6﴿...... छटी नसीह़त :

लोगों से तुम्हारा सुलूक वैसा होना चाहिये जैसा तुम चाहते हो कि वोह तुम्हारे साथ करें...... क्यूं कि बन्दे का ईमान उस वक़्त कामिल होता है जब वोह तमाम लोगों के लिये वोही कुछ पसन्द करे जो अपनी ज़ात के लिये पसन्द करता है।

इ़ल्म व मुत़ालए़ की नौइय्यत

﴾7﴿...... सातवीं नसीह़त :

जब तुम कोई इ़ल्म ह़ासिल करने लगो या मुत़ालआ़ करना चाहो तो बेहतर है कि तुम्हारा इ़ल्म व मुत़ालआ़ ऐसा हो जो तज़्कियए नफ़्स और दिल की इस्लाह़ का बाइ़स हो...... जैसे अगर तुम्हें पता चल जाए कि तुम्हारी उ़म्र का सिर्फ़ एक हफ़्ता बाक़ी है...... तो यक़ीनन तुम उन अय्याम को फ़िक़्ह व मुनाज़रा, उसूलो कलाम और दीगर उ़लूम के हुसूल पर हरगिज़ सर्फ़ नहीं करोगे...... क्यूं कि तुम जानते हो कि अब येह उ़लूम तुम्हें काफ़ी न होंगे...... बल्कि तुम अपने दिल की निगहदाश्त व निगरानी

में मश्ग़ूल हो जाओगे...... नफ़्स की सिफ़ात पहचानने और दुन्यावी तअ़ल्लुक़ात से मुंह मोड़ कर अपने नफ़्स को बुरे अख़्लाक़ से पाक करने की कोशिश करोगे...... और अच्छे अख़्लाक़ अपनाते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत व मह़ब्बत से अपना तअ़ल्लुक़ मज़्बूत़ करने की कोशिश करोगे...... और हर दिन और रात (बल्कि हर लम्ह़ा) इस बात का इम्कान मौजूद है कि इस में इन्सान की मौत वाक़ेअ़ हो जाए।

नजात का मदनी नुस्ख़ा

ऐ नूरे नज़र !

अब मेरी एक और बात ग़ौर से सुनो...... और इस में ग़ौरो फ़िक्र करो ह़त्ता कि तुम्हें अपनी नजात का रास्ता मिल जाए...... सोचो ! अगर तुम्हें येह मा'लूम हो जाए कि बादशाहे वक़्त एक हफ़्ते के बा'द तुम से मिलने आ रहा है तो इस अ़र्से में तुम हर उस जगह की इस्लाह़ करने में मश्ग़ूल हो जाओगे जहां तुम्हारे ख़याल के मुत़ाबिक़ बादशाह की नज़र पड़ सकती है...... मसलन अपने कपड़ों और बदन की देखभाल और ज़ैबो ज़ीनत पर ख़ुसूसी तवज्जोह दोगे...... और घर की इक इक चीज़ को साफ़ सुथरा और आरास्ता करने की कोशिश करोगे।

अब ग़ौर करो कि मैं ने किस त़रफ़ इशारा किया है...... क्यूं कि तुम बड़े समझदार हो और अ़क़्ल मन्द के लिये इशारा काफ़ी होता है।

दिलों और निय्यतों पर नज़र :

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

''اِنَّ اللّٰهَ لَا يَنْظُرُ اِلٰى صُوَرِكُمْ وَلَا اِلٰى اَعْمَالِكُمْ وَلٰكِنْ يَنْظُرُ اِلٰى قُلُوْبِكُمْ وَنِيَّاتِكُمْ'' या'नी : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी शक्लो सूरत और तुम्हारे आ'माल को नहीं बल्कि तुम्हारे दिलों और तुम्हारी निय्यतों को देखता है।''(1)

1......صحيح مسلم، كتاب البر و الصلة و الآداب، باب تحريم ظلم المسلم......الخ، الحديث:٢٥٦٤، ص١٣٨٧.

कितना इ़ल्म फ़र्ज़ है ?(1)

अगर तुम अह़वाले क़ल्ब (या'नी दिल की ह़ालतों) का इ़ल्म ह़ासिल करना चाहते हो तो "**एह़याउल उ़लूम**" और हमारी दीगर तसानीफ़ का मुत़ालआ़ करो...... क्यूं कि येह इ़ल्म तो फ़र्ज़े ऐ़न है जब कि दूसरे उ़लूम फ़र्ज़े किफ़ाया हैं...... अलबत्ता ! इस क़दर इ़ल्म ह़ासिल करना फ़र्ज़ है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुक़र्रर कर्दा फ़राइज़ और अह़काम को कामिल और अच्छे त़रीक़े से सर अन्जाम दिया जा सके...... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें येह इ़ल्म ह़ासिल करने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमाए। (आमीन)

1...... दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 504 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**ग़ीबत की तबाह कारियां**" सफ़ह़ा 5 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه तह़रीर फ़रमाते हैं : सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ या'नी : इ़ल्म ह़ासिल करना हर मुसल्मान मर्द पर **फ़र्ज़** है।" (سنن ابن ماجه ج١ص١٤٦حديث٢٢٤) यहां स्कूल कॉलेज की दुन्यवी ता'लीम नहीं बल्कि ज़रूरी दीनी इ़ल्म मुराद है। लिहाज़ा सब से पहले **बुन्यादी अ़क़ाइद** का सीखना फ़र्ज़ है, इस के बा'द **नमाज़** के फ़राइज़ व शराइत़ व मुफ़्सिदात, फिर रमज़ानुल मुबारक की तशरीफ़ आवरी पर फ़र्ज़ होने की सूरत में **रोज़ों** के ज़रूरी मसाइल, जिस पर ज़कात फ़र्ज़ हो उस के लिये **ज़कात** के ज़रूरी मसाइल, इसी त़रह़ **ह़ज** फ़र्ज़ होने की सूरत में ह़ज के, **निकाह़** करना चाहे तो इस के, **ताजिर** को ख़रीदो फ़रोख़्त के, **नोकरी** करने वाले को नोकरी के, नोकर रखने वाले को **इजारे** के, وَعَلٰى هٰذَا الْقِيَاس (या'नी इसी पर क़ियास करते हुए) **हर मुसल्मान आ़क़िल बालिग़ मर्द व औ़रत पर उस की मौजूदा ह़ालत के मुत़ाबिक़ मस्अले सीखना फ़र्ज़े ऐ़न है। इसी त़रह़ हर एक के लिये मसाइले ह़लाल व ह़राम भी सीखना फ़र्ज़ है।** नीज़ **मसाइले क़ल्ब** (बात़िनी मसाइल) या'नी फ़राइज़े क़ल्बिया (बात़िनी मसाइल) मसलन आ़जिज़ी व इख़्लास और **तवक्कुल** वग़ैरहा और इन को ह़ासिल करने का त़रीक़ा और **बात़िनी गुनाह मसलन तकब्बुर, रियाकारी, ह़सद** वग़ैरहा और इन का इ़लाज सीखना हर मुसल्मान पर अहम फ़राइज़ से है।

(तफ़्सील के लिये देखिये : फ़तावा रज़विय्या, जि. 23, स. 623, 624)

ह़िर्स व त़मअ़ से दूरी

《8》...... आठवीं नसीह़त :

अपने पास दुन्या का माल सिर्फ़ इतना जम्अ़ रखना जो तुम्हें एक साल के अख़राजात व ज़रूरिय्यात के लिये काफ़ी हो...... जैसा कि मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, क़ासिमे ने'मत, मालिके जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी बा'ज़ अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ के लिये ऐसा करते और येह दुआ़ फ़रमाते : ''اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ قُوْتَ اٰلِ مُحَمَّدٍ كَفَافًا'' या'नी : ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! आले मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को ब क़दरे किफ़ायत रोज़ी अ़त़ा फ़रमा ।''(1) और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ के लिये नहीं फ़रमाया करते थे...... बल्कि येह एहतिमाम उन के लिये फ़रमाते जिन के दिल में कुछ ज़ो'फ़ मुलाह़ज़ा फ़रमाते...... और जो यक़ीन के आ'ला दरजे पर फ़ाइज़ थीं उन के लिये एकआध दिन से ज़ियादा का इन्तिज़ाम कभी न फ़रमाते ।

दुआ़ए ख़ास

प्यारे बेटे !

मैं ने इस रिसाला नुमा मक्तूब में तुम्हारे सुवालों के जवाबात लिख दिये हैं...... अब तुम इन पर अ़मल करना शुरूअ़ कर दो और मुझे अपनी नेक दुआ़ओं में याद रखना...... और तुम ने दुआ़ के मुतअ़ल्लिक़ मुझ से पूछा है...... मैं सह़ीह़ अह़ादीसे मुबारका से माख़ूज़ दुआ़ तुम्हें बताता हूं...... येह दुआ़ अपने क़ीमती अवक़ात बिल ख़ुसूस हर नमाज़ के बा'द मांगा करो :

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ مِنَ النِّعْمَةِ تَمَامَهَا وَمِنَ الْعِصْمَةِ دَوَامَهَا وَمِنَ الرَّحْمَةِ شُمُوْلَهَا وَمِنَ الْعَافِيَةِ حُصُوْلَهَا وَمِنَ الْعَيْشِ اَرْغَدَهٗ وَمِنَ الْعُمُرِ اَسْعَدَهٗ وَمِنَ الْاِحْسَانِ اَتَمَّهٗ وَمِنَ الْاَنْعَامِ اَعَمَّهٗ

1......صحيح مسلم، كتاب الزهد والرقائق، الحديث: ٢٩٦٩، ص ١٥٨٨.

وَمِنَ الْفَضْلِ اَعْذَبَهُ وَمِنَ اللُّطْفِ اَقْرَبَهُ. اَللّٰهُمَّ كُنْ لَّنَا وَلَا تَكُنْ عَلَيْنَا. اَللّٰهُمَّ اخْتِمْ بِالسَّعَادَةِ آجَالَنَا وَحَقِّقْ بِالزِّيَادَةِ آمَالَنَا وَاقْرِنْ بِالْعَافِيَةِ غُدُوَّنَا وَ آصَالَنَا وَاجْعَلْ اِلٰى رَحْمَتِكَ مَصِيْرَنَا وَمَآلَنَا وَاصْبُبْ سِجَالَ عَفْوِكَ عَلٰى ذُنُوْبِنَا وَمُنَّ عَلَيْنَا بِاِصْلَاحِ عُيُوْبِنَا وَاجْعَلِ التَّقْوٰى زَادَنَا وَفِىْ دِيْنِكَ اِجْتِهَادَنَا وَعَلَيْكَ تَوَكُّلُنَا وَاِعْتِمَادُنَا. اَللّٰهُمَّ ثَبِّتْنَا عَلٰى نَهْجِ الْاِسْتِقَامَةِ وَاَعِذْنَا فِى الدُّنْيَا مِنْ مُوْجِبَاتِ النَّدَامَةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَخَفِّفْ عَنَّا ثِقْلَ الْاَوْزَارِ وَارْزُقْنَا عِيْشَةَ الْاَبْرَارِ وَاكْفِنَا وَاصْرِفْ عَنَّا شَرَّ الْاَشْرَارِ وَاَعْتِقْ رِقَابَنَا وَرِقَابَ آبَائِنَا وَاُمَّهَاتِنَا وَاَخَوَانِنَا وَاَخَوَاتِنَا وَمَشَايِخِنَا مِنَ النَّارِ بِرَحْمَتِكَ يَا عَزِيْزُ يَا غَفَّارُ يَا كَرِيْمُ يَا سَتَّارُ يَا حَلِيْمُ يَا جَبَّارُ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ وَ يَا اَوَّلَ الْاَوَّلِيْنَ وَيَا آخِرَ الْآخِرِيْنَ وَيَا ذَاالْقُوَّةِ الْمَتِيْنَ وَيَا رَاحِمَ الْمَسَاكِيْنَ وَيَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّىْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ.

या'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से सुवाल करता हूं कामिल ने'मत...... दाइमी इ़स्मत (या'नी हमेशा की पाक दामनी) ...... और ऐसी रह़मत का जो मेरे तमाम उमूर व मुआ़मलात को शामिल हो...... और तुझ से दाइमी ख़ैरो आ़फ़िय्यत...... ख़ुशह़ाल ज़िन्दगी...... सआ़दतों से भरपूर लम्बी त़वील उ़म्र...... कामिल व मुकम्मल एह़सान...... हर ह़ाल में इन्आ़मो इक्राम...... फ़ज़्लो करम...... और ऐसा लुत़्फ़ो अ़त़ा मांगता हूं जो मुझे तेरी बारगाह के मज़ीद क़रीब कर दे।

❁...... ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी मदद फ़रमा...... हर नुक़्सान से मह़फ़ूज़ो मामून फ़रमा...... हमें सआ़दत व आ़फ़िय्यत की मौत अ़त़ा हो...... हमारी उम्मीदें पूरी फ़रमा बल्कि उम्मीदों से बढ़ कर अ़त़ा फ़रमा...... हमारी सुब्ह़ो शाम आ़फ़िय्यत से हमकनार फ़रमा...... हमारा अन्जाम व इख़्तिताम अपनी रह़मत की जानिब फ़रमा...... हमारे गुनाहों की सियाही पर अपनी मग़्फ़िरत की बारिश बरसा दे...... हमारे ऐ़बों की इस्लाह़ फ़रमा कर हम पर एह़सान फ़रमा...... तक़्वा व परहेज़ गारी हमारा ज़ादे राह बना दे...... तेरे दीन की सर

बुलन्दी के लिये हमारी हर कोशिश क़बूल फ़रमा...... तुझी पर हमारा भरोसा है...... और तू ही हमारा सहारा है।

❁...... ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें राहे इस्तिक़ामत पर साबित क़दम रखना...... रोज़े ह़श्र शरमिन्दगी का बाइ़स बनने वाले आ'माल से बचा...... गुनाहों का बोझ हलका फ़रमा...... नेक लोगों जैसी ज़िन्दगी अ़त़ा फ़रमा...... अपने सिवा किसी का मोह़ताज न करना...... बुरे लोगों के शर से बचा।

❁...... ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें, हमारे आबाओ अज्दाद, हमारी माओं, बहनों, भाइयों और हमारे मशाइख़े उ़ज़्ज़ाम व असातिज़ए किराम को जहन्नम की आग से मह़फ़ूज़ फ़रमा......

يَاعَزِيْزُ.يَاغَفَّار ...... يَاكَرِيْمُ.يَاسَتَّار ...... يَاعَلِيْمُ يَاجَبَّار ......

يَااَللّٰهُ ! يَااَللّٰهُ ! يَااَللّٰهُ !...... بِرَحْمَتِكَ يَااَرْحَمَ الرَّاحِمِيْن

❁...... ऐ हर अव्वल से पहले !...... ऐ हर आख़िर के बा'द मौजूद रहने वाले !...... ऐ त़ाक़त व क़ुव्वत वाले ! ...... ऐ मिस्कीनों पर इ़नायतें करने वाले !...... ऐ सब रह़्म करने वालों से ज़ियादा रह़्म फ़रमाने वाले !...... لَآاِلٰهَ اِلَّآاَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّىْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْن۔ ।

وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى سَيِّدِنَامُحَمَّدٍ وَّآلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْن

مآخذ و مراجع

کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
قرآن مجید	کلام باری تعالٰی	مکتبة المدینة ١٤٣٠ھ
ترجمۂ قرآن کنزالایمان	اعلیٰحضرت امام احمد رضا خان رحمة اللہ علیہ متوفّٰی ١٣٤٠ھ	
تفسیرروح البیان	علامہ اسماعیل حقی بروسوی رحمة اللہ علیہ متوفّٰی١١٣٧ھ	
الجامع لاحکام القران	ابوعبد اللہ محمدبن احمدانصاری قرطبی رحمة اللہ علیہ متوفّٰی ٦٧١ھ	دارالفکربیروت ١٤٢٠ھ
تفسیرالسلمی	ابوعبد الرحمن محمد بن الحسین سلمی رحمة اللہ علیہ متوفّٰی٤١٢ھ	دارالکتب العلمیہ١٤٢١ھ
صحیح البخاری	امام محمد بن اسماعیل لبخاری رحمة اللہ علیہ متوفّٰی٢٥٦ھ	دارالکتب العلمیہ ١٤١٩ھ
صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج نیشاپوری رحمة اللہ علیہمتوفّٰی ٢٦١ھ	دارابن حزم بیروت١٤١٩ھ
سنن الترمذی	امام محمد بن عیسٰی ترمذی رحمة اللہ علیہمتوفّٰی٢٧٩ھ	دارالفکربیروت١٤١٤ھ
سنن ابن ماجہ	امام محمد بن یزید قزوینی ابن ماجہ رحمة اللہ علیہ متوفّٰی٢٧٣ھ	دارالمعرفة ١٤٢٠ھ
المسند	امام احمد بن حنبل رحمة اللہ علیہ متوفّٰی ٢٤١ھ	دارالفکربیروت١٤١٤ھ
الزھد	امام احمد بن حنبل رحمة اللہ علیہ متوفّٰی ٢٤١ھ	دار الغد الجدید١٤٢٦ھ
حلیة الاولیاء	امام حافظ ابونعیم اصفہانی رحمة اللہ علیہ متوفّٰی ٤٣٠ھ	دارالکتب العلمیہ١٤١٨ھ
شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمة اللہ علیہ متوفّٰی ٤٥٨ ھ	دارالکتب العلمیہ ١٤٢١ھ
فردوس الاخبار	حافظ شیرویہ بن شہرداربن شیرویہ دیلمی رحمة اللہ علیہ متوفّٰی٥٠٩ھ	دارالفکربیروت١٤١٨ھ
دیوان الحماسہ	ابی تمام حبیب بن اوس طائی متوفّٰی ٦٣١ھ	

गुनाहों से नफ़रत करने का जे़हन

“दा'वते इस्लामी” के सुन्नतों भरे **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **मदनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी (इस्लामी) माह की पहली तारीख़ अपने यहां के (दा'वते इस्लामी के) ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से **पाबन्दे सुन्नत** बनने, **गुनाहों से नफ़रत** करने और **ईमान की हि़फ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

تخایج ایهاالولد

(۱)......تفسیرروح البیان،سورۃالبقرۃ،تحت الایۃ:۲۳۲،ج ۱،ص ۳۶۳۔

(۲)......شعب الایمان للبیھقی،باب فی نشرالعلم،الحدیث:۱۷۷۸،ج ۲،ص ۲۸۵۔

(۳)......صحیح البخاری،کتاب الایمان ،باب دعاؤکم ایمانکم،الحدیث:۸، ج ۱، ص ۱۴۔

(۴)......سنن الترمذی،کتاب صفۃ القیامۃ،باب(ت ۹۰)،الحدیث:۲۴۲۷، ج ۴، ص ۲۰۸۔

(۵)......تفسیرروح البیان،سورۃالبقرۃ،تحت الایۃ:۲۴۲،ج ۱،ص ۳۸۳۔

(۶)......تفسیرروح البیان،سورۃالرعد،تحت الایۃ:۲۴۲،ج ۴،ص ۳۸۸

(۷)......سنن الترمذی،کتاب صفۃ القیامۃ،باب(ت ۹۰)،الحدیث:۲۴۲۷،ج ۴، ص ۲۰۸۔

(۸)......صحیح البخاری،کتاب مناقب الانصار،باب مناقب سعد بن مُعاذ، الحدیث:۳۸۰۳،ج ۲،ص ۵۶۰۔

(۹)......حلیۃ الاولیاء،سلام بن ابی مطیع،الرقم:۸۳۰۱،ج ۶،ص ۲۰۳۔

(۱۰)......المسندللامام احمد بن حنبل،مسندابی سعیدالخدری،الحدیث:۱۱۲۹۵، ج ۴،ص ۶۹۔

(۱۱)......صحیح مسلم،کتاب فضائل الصحابۃ،باب من فضائل عبد اللّٰہ بن عمر، الحدیث:۲۴۷۹،ص ۱۳۴۶۔

(۱۲)......شعب الایمان للبیھقی،باب فی تعدیدنعم اللّٰہ وشکرھا،فصل فی النوم وآدابہ، الحدیث:۴۷۴۶،ج ۴،ص ۱۸۳۔

(۱۳)......فردس الاخباربمأثورالخطاب،امّ سعد،الحدیث:۲۵۳۸،ج ۲،ص ۱۰۱۔

(۱۴)......الجامع لاحکام القران،سورۂ آل عمران،تحت الایۃ:۱۷،ج۳،ص ۳۱۔

(۱۵)......دیوان الحماسہ،باب النسیب،الجزء ۲،ص ۲۳۲۔

(۱۶)......تفسیرروح البیان،سورۂ صٓ،تحت الایۃ:۲۹،ج۸،ص۲۵۔

(۱۷)......حلیۃ الاولیاء،احمد بن ابی الحواری،الرقم:۱۴۳۲۰،ج۱۰،ص۱۳۔

(۱۸)......سنن ابن ماجہ،کتاب الزھد،باب الحسد،الحدیث:۴۲۱۰،ج۴،ص۴۷۳۔

(۱۹)......تفسیرالسلمی،سورۂ النحل،تحت الایۃ:۱۲۵،ج۱،ص۳۷۷۔

(۲۰)......الزھدللامام احمدبن حنبل،من مواعظ عیسی،الحدیث:۳۰۰،ص۹۳۔

(۲۱)......صحیح مسلم،کتاب البر والصلۃ والآداب،باب تحریم ظلم المسلم......الخ، الحدیث:۲۵۶۴،ص۱۳۸۷۔

(۲۲)......صحیح مسلم،کتاب الزھدوالرقائق،الحدیث:۲۹۶۹،ص۱۵۸۸۔

(۲۳)......سنن الترمذی،کتاب العلم،باب ماجاء فی فضل الفقہ،الحدیث:۲۶۹۴، ج۴، ص۳۱۴۔

(۲۴)......سنن الترمذی،کتاب العلم،باب ماجاء فی فضل الفقہ،الحدیث:۲۶۹۰،ج۴، ص۳۱۲۔

(۲۵)......صحیح مسلم،کتاب الذکروالدعاء،باب التعوذ من شر،الحدیث:۲۷۲۲،ص ۱۴۵۷۔

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये **मदनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना जाएज़ा लेते हुए नेक आ'माल का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ के लिये **"नेक आ'माल"** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"मदनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ